Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 14 v\d 12 30 fnlEcj 2015 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

किसान की दुर्दशा

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

''जिसके पांव ना फटी बुबाई। वो क्या जाने पीड़ पराई।।''

राजनीति जो कभी मिशन थी, आज किसान बाबत घड़ियाली आंसू बहाने के सिवा कुछ नहीं है। खेती दम तोड़ रही है, किसान आत्म हत्याएं करने को मजबूर हैं। ''धरती मां कर रही पुकार, अन्नदाता की सुनो पुकार क्योंकि किसान को समय पर बीज, खाद, कीटनाशक नहीं मिलता, पानी की प्रचुर मात्र उपलब्धता नहीं है। बिजली की कमी, कृषि कर्मी जो किसान की रीढ़ की हड्डी हैं, धंधा छोड़ फैक्ट्रीयों में या निर्माण उद्योग में चले गए। किसान के पास इतना सरमाया नहीं कि वे खेत के लिए मशीनें खरीद सकें और ना ही इतनी जोत है कि वे खेती मशीनों से कर सकें। दलहन फसलों का उत्पादन कम हो रहा है, क्योंकि इसमें कृषि मजदूरों की बहुत जरूरत है जो मजबूरी है किसान के नाम पर मिलने वाली सब्सिडी उसे यहीं साहूकार के पास है, क्योंकि खेत खलिहान उसके पास गिरवी पड़े हैं, क्योंकि फसल की बुबाई से कटाई तक हर कदम पर उसे ऋण की जरूरत है, जो साहूकार उसे उपलब्ध करवाता है और फिर हर जरूरत मनमाने भाव पर किसान को देता है और जिन्हें पकने तक किसान खेत खा चुका होता है और पुनः इसी चौरसी चक्र में घिसता रहता है। कर्ज मर्ज गर्ज को पूरा करते-करते उसकी कमर टूट जाती है और आखिर मजबूर होकर अपनी जीवन लीला ही खत्म कर लेता है, यहीं पर उसके दुखों का अंत नही है, उसका परिवार उस ऋण की गर्त में उससे भी अधिक फंस जाता है, क्योंकि एक तो कमाने वाला नहीं रहा दूसरे उसके वारिस छोटे और दो तीन हो गए। पहले से छोटी जोत और भी छोटी हो गई, जो परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत कम हो जाता है।

फसल फेल हो जाती है जिसके अनेक कारण हैं। खेती राम भरोसे है। गत दो वर्ष से कपास की फसल फेल हो रही है। मौसम का भरोसा नहीं, वक्त पर वर्षा नहीं हुई सूखे के मारा, किसी तरह से महंगे, सस्ते जुगाड़ कर बुवाई की तो वर्षा का कहर हो गया। उससे बचा तो कीट पतंग फसली बीमारी ने आ घेरा। यही अंत वहीं थोड़ी फसल बढ़ी कि जंगली जीव जंतु आवारा पशु खेत में पहुंच गए। अब तक सांस रोके खुदा से दुआ करता हुआ फसल पकने की आशा में ही दिन काट ही रहा था कि साहूकार का पंजा कसने लगा- आखिर वह जाए तो जाए कहां।

यही विडंबना है कि राष्ट्र का अन्नदाता स्वयं भूखा है, कोई उसकी व्यथा कथा सुनने को तैयार नहीं है। मुझे बचपन का गीत याद है- ''हक दूजे के मार मार के बन गए लोग अमीर, मैं इसे कहता चोरी लोग कहें तकदीर।'' यही हालात किसान और किसानी से जुड़े सभी वर्गो का है क्योंकि इन सबकी नियति खेत से ही जुड़ी है। कामगार के बिना काश्तकार खेती के सभी कार्य पूरे नहीं कर सकता। काश्तकार के लिए हल-पंजाली, खुरपा, दराती और घर बनाने वाले सभी किसान की श्रेणी में आते हैं। लेकिन आज सरकारें अंग्रेज के पदचिन्हों पर चलते हुए इन्हें बर्बाद करने पर तुली हैं। भारत के किसान को आजादी के बाद चुनौती मिली। भूखे पेट अधनंगे बदन के मालिक काश्तकार ने राष्ट्र की आन-बान के लिए इस चुनौती को स्वीकार और 'हरित क्रांति, सफेद क्रांति तथा नीली क्रांति' लाकर राष्ट्र को खाद्यान्न के लिए स्वावलंबी बना दिया लेकिन जब उसकी बारी आई तो सभी ने उससे मुंह मोड़ लिए। उसकी लागत से भी कम यानि एक एकड़ भूमि में 45000 रू. की लागत से तैयार फसल कर्ज-मर्ज-गर्ज तथा मौसम की मार खाने के बाद भी 40000 रूपये से अधिक उसे नहीं मिलता।

'k"k i`t&2 ij

दीनबन्धु सर छोटूराम जयंती समारोह 12.02.2016

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला द्वारा बसंत पंचमी एवं दीनबंधु सर छोटूराम की 135वीं जयंती के भुभ अवसर पर समारोह का आयोजन 12 फरवरी, 2016 को दीनबंधु सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला में किया जाएगा। हरियाणवी रागनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्शण होंगे। इस अवसर पर मेधावी छात्र, छात्राओं, खेलों में उत्कृश्ट स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों, भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर मैकिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। जाट सभा के आजीवन सदस्य जो की जनवरी 2015 से दिसंबर 2015 के बीच सेवानिवृत्त हुए हैं उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा। अतः वे अपना नाम, पता व विभाग का नाम तथा सेवानिवृत्त का महीना व दूरभाश नंबर जाट सभा चंडीगढ़ को 15 जनवरी 2016 तक सूचित करें। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला द्वारा इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी। आप इस स्मारिका में निबंध या कविता भेजना चाहते हो तो 15 जनवरी 2016 तक भेजें। इस समारोह को सफल बनाने के लिए सभी सदस्यों से निवेदन है कि वे सह परिवार तथा अपने अन्य साथियों सहित समारोह में भाग लें।

'k"k i!t&1

कृषि विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार काश्तकार द्वारा उत्पन्न की जाने वाली सभी फसलों की लागत सरकार द्वारा हर वर्ष निर्धारित की जाने वाली उपज मूल्य से कहीं अधिक है। विभाग के आंकलन के अनुसार गन्ने की फसल पर किसान का 226 रूपये प्रति क्विंटल खर्च आता है जबकि सरकार द्वारा सामान्य से लेकर उच्च किस्म के गन्ने का 180-210 रूपये तक का भुगतान उसके लिए भी काश्तकार को महीनों तक इंतजार करना पड़ता है। इसी प्रकार मुख्य फसलें गेहूं व धान पर किसान को तकरीबन 2253 रूपये प्रति क्विंटल खर्च करना पड़ता है लेकिन सरकार द्वारा किसान को इसके बदले क्रमशः 1285 व 1450 रूपये प्रति क्विंटल की निर्धारित दर से भी कम 1200 रू. मूल्य उपलब्ध करवाया गया। गत खरीफ के सीजन में तो बासमती धान, आलू आदि फसलों की सरकारी खरीद ना होने के कारण किसान को बासमती पूसा धान 1450 व 1500 रूपये प्रति क्विंटल व आलू 3 रूपये प्रति किलो के हिसाब से बेचना पड़ा जो कि व्यापारियों के हाथों में आने के बाद क्रमशः 3500 रूपये प्रति क्विंटल व 10 रूपये प्रति किलो के हिसाब से बेचा गया। इसके अलावा फसल प्राकृतिक आपदा के कारण खराब हो जाने पर सरकार की तरफ से दी जाने वाली आर्थिक सहायता या मुआवजा नाम मात्र ही होता है।

अतः आज यह मेहनतकश, संघर्षशील वर्ग आत्महत्याएं करने को मजबूर है। राष्ट्रीय अपराधि करण रिकार्ड के अनुसार 1995 से 2009 तक ही करीब 2 लाख 42 हजार किसान आत्महत्या करने को मजबूर हुए हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि वर्ष 2005 से 2007 तक महाराष्ट्र में 4453, आंध्र प्रदेश में 1313, गुजरात में 387, केरल में 905, पंजाब में 75, तमिलनाडु में 26 तथा छत्तीसगढ़ में 1500 किसान आत्महत्या के शिकार हुए। सरकारी आंकड़ों के अनुसार राष्ट्र में केवल वर्ष 2009 में 17638 किसानों द्वारा आत्महत्या की गई हैं। केवल 2013 में 337 किसानों ने आत्महत्या की केवल हरियाणा में 374 किसानों की यह दुर्दशा हुई। इसके बावजूद भी किसानों की पुस्तैनी कीमती जमीन को जनहित व विशेष आर्थिक जोन (सेज) के नाम से कौड़ियों के भाव खरीदकर उद्योगपतियों, भू-माफियों एवं बिल्डरों की मिलीभगत से अपने चहेतों व राजनीतिज्ञों को लाभ पहुंचाने के लिए करोड़ों के भाव बेची गई एकेले हरियाणा राज्य में वर्ष 2005 से 2014 तक तकरीबन 25000 एकड़ जमीन का अधिकरण गिने-चुने चेहतों को लाभ पहुंचाने हेतु किया गया। भारतीय प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष एम वीरप्पा मोईली के अनुसार चीन में मात्र छः सेज हैं। इक्नोमिक पालिटीक्ल विकली पत्रिका के अनुसार चीन के तीन सेज लगभग असफल हैं।

गत 28 वर्षों से मुआवजे की बाट जोहते किसान सड़कों पर उतर आए- लेकिन किसे सुनाए कौन सुनेगा दिल का हाल''

स्वतंत्र भारत में हर छोटे-बड़े व्यापारी, दुकानदार, कर्मचारी वर्ग, कामगार इत्यादि सभी के अपने-अपने संगठन बने हुए हैं जो अपने हक के लिए आंदोलन तक भी कर सकते हैं। लेकिन बेचारे अन्नदाता का संगठन तो दूर कोई प्रवक्ता तक नहीं है जो कि इसकी आवाज को निरंकुश सरकारी तंत्र तक पहुंचा सके। सरकार के उपेक्षापूर्ण रवैये से तंग होकर अगर यह संगठनहीन वर्ग अपने हक के लिए आवाज उठाने की कोशिश करते हैं तो उसके बलपूर्वक दबा दिया जाता है। नंदीग्राम (पश्चिमी बंगाल), नोएडा (उ.प्र.), गुड़गांवा (हरियाणा) आदि की घटनाएं बहुत से उदाहरण हैं जहां पर किसानों और कामगारों द्वारा अपने हक के लिए उठाई गई आवाज को बलप्रयोग से दबा दिया गया क्योंकि इस उपेक्षित वर्ग के हितों की आवाज उठाकर पैरवाई करने की किसी को कोई सुध नहीं। यह तो वही बात हुई कि:-

''हम (किसान मजदूर) आहें भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम,

लेकिन वो (सरमायेदार) कत्ल भी करते हैं तो चर्चा भी नहीं होती।''

किसान की दशा सुधारने और दिशा देने में कृषि विश्वविद्यालयों को और अनुसंधान और सहयोग देना होगा। तभी महात्मा गांधी का स्वप्न पूरा होगा कि ग्रामीण विकास से ही देश का विकास संभव है।

सिंचाई की कमी को पाटने हेतू वाटर शैड निर्मित हों, कम पानी से फसल हो सके ऐसे बीज और खेत में मशीन के प्रयोग को बढ़ावें, सहकारी कृषि, ऋण की उपलब्धता हेतु सरकार को प्रोत्साहन देना होगा। आरगेनिक खाद का प्रचार प्रसार और उपलब्धता उत्पादकता उत्तम और अधि क होने की संभावना है। वित्तिय सहायता और मण्डी

की सुविधा सीधी हो आज किसान का सबसे बड़ा दुश्मन मिडलमैन है जो 70 से 75 फीसदी तक लाभ कमा रहा है और किसान के हितों पर डाका डाल रहा है। अन्यथा कम होती जोत और कमाई से लोग किसानी छोड़ गए तो देश का क्या होगा–सोच कर ही डर लगता है।

देश आजाद हुए 65 वर्ष हो गए परंतु किसान की खुशहाली व तरक्की के लिए आज तक कोई भी कारगर योजना नहीं बनाई गई है जबकि देश का आर्थिक ढांचा और 70 प्रतिशत आबादी कृषि पर आधारित है। उद्योगों को कच्चा माल तथा 58 प्रतिशत रोजगार कृषि से ही मिलता है और किसान देश की 125 करोड़ आबादी का पेट अपना खून पसीना बहाकर पालता है। भारतीय महा लेखाकार नियंत्रक (कैग) की एक रिपोर्ट के अनुसार अकेले वर्ष 2011–12 के दौरान देश के कार्पोरेट सैक्टर के अमीर घरानों को प्रत्यक्ष करों में छूट देने से केंद्रीय सरकार को 1 लाख 38 हजार करोड़ रूपये का आर्थिक नुकसान हुआ है और आरंभ से ही सरकारी मिलीभगत से यह गोरखधंधा हर वर्ष चलता रहा है लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि गरीब काश्तकार को प्राकृतिक आपदा से फसल नष्ट हो जाने पर 1500 रूपये प्रति एकड़ का मुआवजा पाने के लिए धक्के खाने पड़ते हैं और उसकी फसल पर 50 रूपये प्रति क्विंटल बोनस देने से आम आदमी के ऊपर अतिरिक्त भार पड़ने का बवाल मचा दिया जाता है।

विकास के नाम पर आज बहुराष्ट्रीय कंपनियां हाईब्रिड बीज के नाम से किसान को महंगे भाव पर बीज उपलब्ध करवा रही है ताकि भोला–भाला इंसान उन्हीं से हर वर्ष बीज लेने को मजबूर हो जाए। उसका तकनीकी ज्ञान उसे नहीं दिया जाता और इस हाईब्रिड और उन्नत बीज के नाम पर जिनेटिक चेंज की बीमारियां भी उसके खेत को मुफ्त मिल रही है। बीटी काटन तथा बैमन के केस में ऐसा हो चुका है गरीबी नहीं नसीब हटाओ की पैरोकारी कर राष्ट्र को बांटों और मौज करो। राष्ट्र घोटालों का देश बन चुका है। राष्ट्र के सर्वोच्च पदों पर आसीन भ्रष्टाचार में डूबे हैं। लेखक निम्न कथन करने के लिए मजबूर है।

वही कातिल, वही रहबर, वही मुनसिब ठहरे।
अकरवां मेरे करे खून का दावा किस पर।।

किसान की दशा सुधारने हेतू कुछेक सुझाव हैं जैसे फल सब्जी की निरंतर आवश्यकता है, लेकिन व्यापारी 70–75 फीसदी लाभांश कमाता है, किसान ठगा सा रह जाता है। उस पर घोटाले ब्याज घोटाला, (चावल) धान घोटाला, हो।

क्योंकि शीत भण्डारण की कमी है, और ना ही किसान भण्डारण की सामर्थ रखता है। इसी का लाभ उठा व्यापारी औने–पौने भाव खरीद मनमाने मूल्य वसूलता है। कृषि में गोबर की खाद उचित है लेकिन ना पशुपालन लाभ की दृष्टि से उचित है और गोबर ईंधन के तौर पर इस्तेमाल हो रहा है, उसे व्यकलपिक ईंधन उपलब्ध हो, सहकारी खेती को बढ़ावा मिले। एक सर्वेक्षण से पता चला है कि 30 से 40 फीसदी कृषि उत्पाद भण्डारण समस्या के कारण खराब हो जाता है जिसका आंकलन 35000 करोड़ रू. बनता है।

आज अव्यवस्थित व निरंकुश हो चुके सरकारी माहौल से किसान कामगार को उभारने के लिए आम नागरिक विशेषकर बुद्धिजीवियों, अर्थशास्त्रीयों को आगे आने की जरूरत है। कामगार व काश्तकार की दशा सुधारने के लिए समस्त कल्याणकारी योजनाओं को दुरूस्त करके अधिक प्रभावी व सुचारू रूप से चलाने की आवश्यकता है। निरंतर उपेक्षित हो रही कृषि व्यवस्था को उभारने के लिए उद्योगों की तर्ज पर अलग से राष्ट्रीय कृषि आपदा कोश स्थापित करके कृषि व इससे जुड़े समस्त वर्गों को आर्थिक सहायता मुहैया करवाई जाए ताकि आज पूर्णतया पिछड़ चुके किसान काश्तकार व कामगार वर्ग की आर्थिक दशा को उभार कर राष्ट्र को भुखमरी के अंदेशे से बचाया जा सके। इसके साथ ही किसान को सत्ता में अपनी भागीदारी बनाकर अपने मत की कीमत का पता लगाना होगा। किसान तभी बचेगा, खेत बचेगा और रोजी रोटी बचेगी और देश बचेगा।

जिस देश का अन्नदाता भूखा हो, फिर उस देश की हालत क्या होगी, अभी चेत जाओ।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

आरक्षण की नहीं अवसर की दरकार

नरेंद्र विद्यालंकार, पंचकुला

पढ़ाई–लिखाई और प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यार्थियों और अभ्यार्थियों को आरक्षण नहीं बल्कि सही अवसर की जरूरत है। जब तक विद्यार्थियों और अभ्यार्थियों में स्वच्छ प्रतियोगिता की भावना का बीजोरोपण नहीं किया जाएगा तब तक किसी का भला नहीं होगा, न तो जातियों का, न समाज का और न ही विद्यार्थियों और अभ्यार्थियों का। भला होगा तो केवल और केवल उन राजनेताओं का जिनके पास न तो अपनी बुद्धि है, न तार्किकता और न ही सामाजिक सरोकारों भरी सोच। उनके पास तो समाज को तोड़ने और बांटने के लिए आरक्षण जैसे मुद्दे ऐसे हथियार हैं जिनका इस्तेमाल वे सत्ता तक पहुंचने और सत्ता में बने रहने के लिए करते हैं। हरियाणा का जहां तक सवाल है तो जिन नेताओं ने सूबे में आरक्षण को हवा दी सत्ता में पहुंचते ही उनकी आवाज कुंद हो जाती है। जनता भी नेताओं की चाल को समझती है, फिर भी उनके झांसे में आ जाती है।

हरियाणा में लंबे समय तक कांग्रेस सत्तारूढ़ रही है। कांग्रेस ने प्रदेश में विधानसभा चुनाव से ऐन पहले जाट, बिश्नोई, रोड़ समेत जिन पांच जातियों को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) में शामिल करने का कार्ड खेला उससे न तो इन बिरादरियों का फायदा हुआ और न ही कांग्रेस को ही कोई सियासी लाभ मिला। दोनों ही खुद को ठगा महसूस कर रहे हैं। जहां कांग्रेस को इन बिरादरियों का वोट नहीं मिला और स्थिति यह है कि ये जातियां ओबीसी से बाहर हो गई हैं।

ऐसा नहीं कि खेल कांग्रेस ने ही खेला बल्कि इसमें भाजपा भी पूरी तरह शामिल है। भाजपा इस खेल में शामिल होने से इनकार नहीं कर सकती है। वह चाहती तो राजस्थान के नक्शे कदम पर चल सकती थी। अब उक्त पांचों बिरादरियों को समझ लेना चाहिए कि उन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग का दर्जा नहीं मिलने वाला। चाहे वे कोई भी रास्ता क्यों न अपना लें, उनका हर दांव औंधे मुंह गिरेगा, क्योंकि समय और हालात उनके खिलाफ हैं।

आरक्षण रद करने के इन तर्कों में कोई दम नहीं कि उक्त पांचों बिरादरियां सामाजिक और आर्थिक रूप से सुदृढ़ हैं। अब ये तर्क बीते जमाने की बात है। जहां तक आरक्षण पाने वाले यादवों, गूजरों और सैनियों का सवाल है तो वे भी तो काफी असरदार हैं। इन तीनों जातियों का सामाजिक और आर्थिक ताना–बाना भी कमतर नहीं है। इन तीनों जातियों को अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल करने के पीछे जो अवधारणा रही है, जाटों समेत पांचों जातियों के मामले में भी वही अवधारणा है। अब यादवों को ही देखिए। एनसीआर की पूरी बैल्ट (क्षेत्र) में यादवों का एकछत्र राज है। गुड़गांव से नारनौल तक जमीनों के भाव कई गुणा बढ़ गए हैं। गुड़गांव और बाबल में औद्योगिक क्षेत्र हैं, जहां नौकरियों की बहार है। ऊपर से यादवों की सत्ता में भागीदारी हमेशा रही है, फिर भी वे अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल हैं। गूजर और सैनियों की हालत बेहतर है। जिन इलाकों में गूजरों और सैनियों की ज्यादा तादाद है वहां जमीनों के भाव बाकी हरियाणा के मुकाबले कई गुणा हैं।

ये तर्क बेमानी हैं कि जाट, बिश्नोई, रोड़ और सिख अभी भी सामाजिक और आर्थिक रूप से सबल हैं और हरियाणा में इन्हें आरक्षण की जरूरत नहीं है। पिछड़े पैंसठ सालों में सबकुछ उलट–पुलट गया है। अकेले इन पांचों बिरादरियों का ही नहीं बल्कि बाकी सवर्णों का सामाजिक और आर्थिक ताना–बाना भी ध्वस्त हुआ है। जिन्हें कमजोर जातियां मानकर आरक्षण दिया गया था उनके लोग कहीं बेहतर जीवन यापन कर रहे हैं। रोजगार के कारण उनमें संपन्नता बढ़ी है। जीवन स्तर ऊंचा हुआ है, लेकिन सभी का जीवन स्तर बढ़ा है ऐसा कतई नहीं है। यह जरूरी नहीं कि सभी सवर्ण खुशहाल हैं। सत्तर फीसदी सवर्ण को ज्यादातर गांव में रहते हैं वे बदतर स्थिति में हैं। दिखावा ही दिखावा है। असल में तो उनकी स्थिति बहुत खराब है। गरीबी घुटनों तक पहुंच गई है। वे परिवार ठीक–ठाक जीवन यापन कर रहे हैं जिनके सदस्य नौकरियों में हैं।

सही मायनों में तो जातियों के आधार पर आरक्षण की अवधारणा ध्वस्त हो चुकी है। ब्राह्मणों, बनियों, पंजाबियों में भी ऐसे लोगों की भरमार है, जिन्हें अपना वजूद बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। अब तो व्यापार के क्षेत्र में उतार–चढ़ाव के कारण व्यापारी तबके से जुड़े लोगों का रूझान भी नौकरियों की ओर हो चला है।

असल में सबकुछ दिशाहीन है। बेरोजगारी दिन–ब–दिन बढ़ रही है। नेता भी सब जानते हैं। लेकिन समाधान नहीं सूझ रहा है। इसलिए सभी पार्टियों का एक ही मकसद है कि उलटे–सीधे फैसले करके लोगों को उलझाए रखना।

देश की मूल समस्या बढ़ती आबादी है। कोई भी पार्टी इस मामले में गंभीर नहीं है। हर साल करोड़ों लोग रोजगार को लाईन में लग रहे हैं। लेकिन राजनेता हैं कि ऐसी बातों में उलझे जो देश को किसी ओर दिशा में ले जा रही हैं।

आरक्षण को लेकर हरियाणा में तथाकथित नेताओं की भरमार है। उनके अपने तर्क और एजेंडे हैं। लोगों को भड़काने के सिवाय उनके पास कोई रास्ता नहीं है। एक सांसद भी बिना बात के अनाप–शनाप बयानबाजी और आरक्षण को लेकर जाटों समेत पांचों बिरादरियों की किलेबंदी में लगा है। लगता है भाजपा में इसे रोकने–टोकने वाला काई नहीं है।

मेरी राय में उक्त पांचों बिरादरियों के पास एक ही ठोस विकल्प है बाकी पची पचास फीसद नोकरियों के लिए अपने बच्चों को बेहतर से बेहतर प्रशिक्षण दिलवाना। इसके अलावा बेहतरीन शिक्षा संस्थान खोलकर ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति की जाए जो नित नए मानदंडों को पार करें। ऊपर से आर्थिक रूप से संपन्न लोग इन संस्थानों की मदद के लिए आगे आएं

देखिए, साल दो साल में ही कितना बदलाव आएगा। बिहार के अकेले आनंद कुमार जब बीड़ा उठा सकते हैं तो क्या जाटों समेत पांचों बिरादरियों में इतना दम नहीं है जो दो–चार अच्छे शिक्षा संस्थान खोलकर अपने बच्चों के सुनहरे सपनों की ऊंची परवाज के बेहतर शिक्षा के मजबूत पंख नहीं दे सकते।

जिसके चित में कभी क्रोध नहीं आता और जिसके हृदय में सदैव परमेश्वर विराजमान रहता है, वह इंसान ईश्वर तुल्य है।

भारत का सूरज : 'सूरजमल'

डॉ. विश्वबंधु शर्मा

गतांक से आगे....

माधोसिंह नै हरायां पाछै सूरजमल के हौसले और बुलंद होगे थे। मोती डूंगरी की लड़ाई मै इसकी नयी पैदल फोज नै जो कमाल दिखाया था। ओड़े ए सूरजमल तैं मेवाड़ के राणा, अजमेर के चौहान अर दक्षिण के मराठे खौफ खाण लाग गे थे। दिल्ली का राजा इस बात नैं दूर बैठ्या देखै था। वो न्यूं चाहवै था जै जयपुर की ताकत कम हो ज्यागी तो ए तेरी पूछ रहैगी। पर पासा ओला पड्या एक नई ताकत सूरजमल उभरकें आग्यी। जिस जनता धोरै कोए नायक ना था वा कृषक जनता धीरे–धीरे सारी कट्ठी होगी। उन म्हं रोटी–बेटी का संबंध हटके फेर होग्या। पालां अर खापां नै कट्ठी होकें बदनसिंह को अपना रक्षक मान लिया था।

सूरजमल की नजर इब दिल्ली पर थी। पैदल पल्टन की सिखलाई पूरी होगी अर एक आच्छी तगड़ी फौज लेकें सूरजमल नै दिल्ली कान्हीं कूंच कर दिया। या सुण कें मुसलमानां की सत्ता कांपग्यी अर उसने सोची यो मौका लड़ण का ना सै। सूरजमल जिसा सेना का नायक सारे भारत म्हं इब दूजा नहीं सै। या सोच के दिल्ली के दरबार नै आपणा राजदूत मंसूर अली भरतपुर भेज दिया। उसनै दिल्ली दरबार की तरफ तैं अनेक उपहार राजा बदनसिंह ताहीं देकें उसका राजा के रूप मंह मान कर्या था और भरतपुर को एक अलग राजा मान लिया था। बोहत मिठा बोल के, राजा बदनसिंह का न्योता दिया अर कह्या के दिल्ली दरबार मंह थारा आच्छा आसण होगा। मैं राजपूतां की ढालां तनै दास नहीं मानूं सूं, बल्कि आपणा मित्तर मानूं सूं। न्यूं भी चाहूं सूं अक दिल्ली की सत्ता पै जो कोए बाहरी दुश्मन आकरमण करैगा तो तूं ए लाज बचावैगा।

राजा नै दोस्ती का न्योता मान लिया और कह्या के जो कोई बाहरले देसां का दुश्मन तेरे कान्हीं देखैगा तो हम दोनों मिलकें उसका मुकाबला करागें। जब सूरजमल दिल्ली पोंहच्या तो राजदूत आगै पाया, खूब आवभगत करी। कई दिन दिल्ली में सूरजमल रह्या। ओड़ै भारत देस को एक राखण खातर रोज नये–नये फारमूले त्यार करें जां थे। इस मौके पै सूरजमल नै कही अक पहली शर्त इस देश मै पूजा की आजादी होणी चाहिये। राज के ऊंचे ओहदां पै हिंदू बी लगाणे चाहिएं। ये सारी सरत दिल्ली के दरबार ने मान ली। इस तरहां दिल्ली तैं भरतपुर की संधि होग्यी। बिना लड़ाई आपणी बात सूरजमल नै मनवा ली।

फेर सूरजमल दिल्ली तैं दक्षिण मंह बलभगढ़ आग्या। औड़ै बलराम राजा था, वो पाछली सारी बात के सूरजमल तै मिल्या। उसने आपणी बेबे का डोला सूरजमल तांही देण की कही तो पिता की आज्ञा तैं या बात उसनै मान ली। किशन सिंह गूजर क्रांति का अगवा था, वो भी आकें सूरजमल गेल मिलग्या। न्यूं दिल्ली कै ओड़ै–धोड़ै सूरजमल की ताकत बढग्यी।

बलराम नै बताया आजकल पलवल का राजा सादत खां सै। बोहत अत्याचारी सै बड़ा करूर सै रोज नया अत्याचार जनता पै करै सै। हिंदू जनता उसतै तंग आ रह्यी सै। जै वो गढ़ तोड़ दिया जा तै दिल्ली कै चुगरदें हिंदू राज होज्यां गे। या बात सूरजमल नै भी मान ली। दोनवां नै मिलकें पलवल पै चढ़ाई करदी।

पलवल का किला अच्छा मजबूत था, पर सूरजमल की सेना कै साहमी ज्यूहीं फोज आई अर भो करड़ी करकें सूरजमल नै हुंकारा लिया अर उसकी तलवार छपाछप छपाछप चालन लाग्यी तो दो घड़ी मंह ए लाशां के ढेर लाग गे सादत खां आपणी ज्यान बचाकें भाजण मंह ए कामयाब होग्या।

फेर तेवतिया अर मुडेर पाल कट्ठी होगी ओड़ै का दीवान मंगला था। पूरा आपणे मालिक का भगत, आकें पायां मंह लोटग्या। सूरजमल नै उस तांही अभय दान दे दिया। पलवल जीत के भरतपुर राज की सीमां मंह मिला लिया अर ओड़ै का दीवान मंगला को बणा दिया। मंगला नै सूरजमल तांही एक खास घोड़ा अर खास तलवार भेंट मंह दी। सारी पालों के और खापों के सरदार मिले। सबनै साथ देण का बचन लिया, अर आपणी सुरक्षा बदले मंह मांगी, अर कह्या सूरजमल तूं ही म्हारा नेता सै, तूं ही म्हारा रक्षक सै। सूरजमल नै जनता तै कही इन किसानां तै पैदावार का चौथा हिस्सा नहीं लिया जागा, बल्कि थोड़ा बोहत कर लगाया जागा। अर जो कर लगाया जागा उसतै इस इलाके की बढ़ोतरी के काम करे जांगे। न्यूं कह कें उन तांही भरोसा दिला के, सूरज मल होडल कान्ही चाल पड्या।

सूरजमल होडल आयै सै न्यू जाण कें सौरातों का सरदार कांशीराम सिंघ दबार पै आगै आकें खड़्या होग्या। उसने सारे नगर को सजा दिया, अर कह्या के आज म्हारे महाराज की सवारी आवै सै, सारै या कह कें पां–पां पै, डंग–डंग पै दरवाजे बणा कें, खूब सजाये गये। बंदनबार लटकायी गयी। राजा के आणे की खुशी म्हं स्वागत गीत गाये गये, बाजे बजाये गये, शहनाई की गूंज सुणाई गई। सूरजमल हाथी पै चढ़कें चालै था, उसकी सवारी नगर के बीच मंह तंह होकें जाण लाग रह्यी थी।

बीच म्हं एक खेल का मैदान पड़ै था। कुछ बालक ओड़ै खेलण लाग रे थे। बालकां नै उस म्हं क्यारी बणा राखी थी। हाथी के गेल्यां घणा ए कबाड़ था, वो जिब मैदान पर को गुजरा तो सारी अर किल्ले ढहगे। जब किशोरी ताहीं या बात बताई गई तो गुस्से तै लाल–पीली होगी आर डंड्डा ठाके हाथी कै आगे आकें न्यू बोली रै ओ सवारी आले। इसने म्हारा सारा खेल बिगाड़ दिया म्हारे किल्ले क्यारी ढा दिये कै तो इसने मोड़ लेज्या नां तो इस डण्डे तै इसका सिर फोड़ द्यूंगी। न्यूं कहकें डण्डा हाथी के मुंह मंह फंसा दिया। सूरजमल देखता रह्या कुछ बोल नां सक्या। मन मै सोची वाह रै सूरज मल तेरै साहमी डटणिया एक भी बहादुर नां सै या छत्राणी कडैं तैं आगी।

सूरजमल नै आपणी सवारी रोक ली। हाथी बिठा दिया अर न्यूं बोल्या भई तेरी या ए मरजी सै तो आगै सवारी नहीं ले ज्यावांगै

आदि से अंत तक हमारा जीवन एक प्रकार की मृत्यु है जिसका अर्थ है अधिक विशाल जीवन। –डा. राधाकृष्णन

पर तूं न्यूं तो बता तूं सै कोण इतणी हिम्मत आली? जो उस सूरजमल की सवारी नै रोकै सै जिसकी सवारी नै बड़े–बड़े योधा भी सलाम करै सैं। मै चाहे कोए होऊं तैन्ने मेरे तै के सै। जै सवारी नै उल्टी ले ज्यागा तो म्हारा थारा के झगड़ा सै। सूरजमल न्यूं बोल्या जै सवारी आगैं लेज्यां तो। तो किशोरी बोल्ली इस डण्डे तै पहलां तो तेरे इस हाथी नै मारूंगी अर फेर तेरा नंबर सै।

आगै–आगै जो बाजा बाजै था, वो दूर जा लिया अर सूरजमल की सवारी का हाथी आगै नां आया सोच के स्याणे–स्याणे आदमी औड़े गये तो देख्या किशोरी रास्ता रोकें खड़ी सै। सारे होडल के लोग दातां तले ऊंगली दबायें खड़े सै। कुछ न्यूं बोले या नां बचै आज अर ना इसका बाप बचै यो कुणबा तो खत्म होग्या समझो।

इतनी बार म्हं सौरोतां का सरदार कांशीराम ओड़ै आग्या। हाथ जोड़ के कहण लागग्या महाराज या तो बालक सै पतर नहीं क्यूं विधाता नै इसकी मति फेर दी। इसनै थारी सवारी रोक दी। इसके खातर मै थारे तैं माफी मांगूं सूं थामें इसने माफ कर द्यो।

सूरजमल बोल्या माफ तो कर द्यूं, पर मन्नै न्यूं तो बता या छोरी सै किसकी। कांशीराम हाथ जोड़ कें बोल्या महाराज या निरभाग मेरी ए लड़की सै। इसके अपराध के खातर आप जो मरजी दण्ड दे द्यो मै मंजूर करूंगा। बेटी का बाप सूं महाराज। इस खातर थामें मन्ने माफ कर द्यो अर इस छोरी नै भी माफ कर द्यो। मैं मानूं सूं इसने जो अपराध कर्या सै वो माफ करन जोगा तो नहीं सै, पर या नदान सै, बुद्धिहीन सै।

सूरजमल बोल्या कांशीराम तू मानै सै इसनै अपराध कर्या सै। हां महाराज मै मानूं सूं इसने अपराध कर्या सै, पर कर्या सै बिना ग्यान। ईब आपकी मरजी। सूरजमल बोल्या यो पाप अर अपराध नां सै या तो इसकी वीरता सै। मैं वीरता का कायल सूं तूं ठीक सोचै तो मैं एक बात कह द्यूं। हां महाराज कह द्यो। सारे नर–नारी जो इस तमाशे म्हं शरीक होरे थे, सोचैं थे राजा सूरजमल ईब पता नहीं के दण्ड काशीराम कै लावैगा। बेचारा छोरी की नासमझी तैं मारा गया, या सोचण लाग रह्ये थे। अर काशीराम की धोती गिल्ली होण नै हो र्यी थी तो सूरजमल बोल्या– "कांशीराम मैं सूरजमल भरतपुर के राजा बदनसिंह का पुत्तर आज इन सारे लोगां के स्याहमी इस सुवीरा, कल्याणी, छत्राणी किशोरी की भीख मांगू सूं। कन्या कांशीराम मन्नै दान में दे दे।"

सूरजमल की या बाणी सुण कें सबके पायां के नीचे तै जमीन खिसकगी। कांशीराम बोल्या महाराज बोल्या महाराज आप तो ब्रजमण्डल के सरदार सो भरतपुर के भावी राजा सो मेरा तो होडल छोटा सा गाम सै। मैं आपने के दे सकूं सूं। हे महाराज कड़ै तो राजा भोज अर कड़ै गंगला तेली यो संबंध क्यूं कर बण सकै सै। मेरे धोरै तो इतना धन बी कोनी के मैं थारी बारात नै ठीक ढंग तै रोटी बी खुवा सकूं अर थारी आवभगत कर सकूं।

सूरजमल बोल्या कांशीराम जी तुम मन्नै के देणा चाहवो सो मन्नै नहीं बेरा। पर मै कन्या नै सबतै बड़ा दहेज मानूं सूं अर याहे मैं थारे तै मागूै सूं। यो समाचार सुण कें सार्या के हाथ पां फूल गे सारे सौरत भाई कट्ठे होगे। सारे पंचां नै मिलकें यो फैसला कर्या भाई कांशीराम जै राजा नै यो रिस्ता मंजूर सै तो तूं क्यूं मना करै सै। यो तो म्हारे समाज की तरक्की का टेम आग्या। राजा तै संबंध बणै इसतैं बड्डा और हमनै के चाहिऐ सै भाई। जै आज हमनै इसका मान नहीं राख्या तो इसतै बड्डा मान हमनै कोण देगा। सारे सारोत कट्ठे मिलकें कन्यादान का परबंध करण लाग गे।

एक हरकार होडल तै भरतपुर महाराज बदनसिंह धोरै भेज दिया। जिस ढाल कदे महाराज जनक नै अयोध्या मंह मिथला नगरी तै भेज्या था। हरकारे नै जाकें भरतपुर मंह बताई तो भरतपुर तै बरात होडल मंह आई। बरात के थी पूरा लस्कर का लस्कर था। होडल मंह न्यूं लागे था जणूं माता लछमी का बासा हो रह्या सै। हरेक घर मंह खुशी ए खुशी थी न्यूं लागै था कांशीराम की छोरी का ब्याह नहीं जणूं सारे सारोतां कै ब्याह सै। सारी जनता खुशी मंह फुली ना समावै थी। हांसी, ठिठोली अर मसखरी हों थी। सूरजमल का तेज तो दिन दुगणा रात चौगणा बढ़ता जा रह्या था। ब्याह के नई राणी भरतपुर मंह ले ज्याई गई। पता नहीं भगवान नै किशोरी तै इसा रूप क्यू कर दिया था। उसनै देख कें कामदेव की पत्नी रती भी शरमा ज्या थी। किशोरी पे दिन दुणी रात चौगणी तरूणाई आण लाग र्ही थी। सूरजमल गेल्यां जब वा लिकड़कै चालै थी तो लोग इस जोड़ी नै देखण खातर आवै थे। भगवान नै जणूं या जोड़ी खाली बैठ कें घड़ी थी।

शोक समाचार

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के सुनील कुमार सुपुत्र श्री जय कुमार का 23 *वर्ष की आयु में* 22 *नवम्बर* 2015 *को उनके पैत्रिक गांव बिलासपुर जिला पानीपत में निधन हो गया। जाट सभा की कार्यकारिणी द्वारा शोक प्रस्ताव पारित करके उनके निधन पर शोक व्यक्त किया गया। अपने शोक सन्देश में सभा के प्रधान डॉ० एम०एस० मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत) ने कहा कि वह जाट सभा के एक कर्मठ व वरिष्ठ आजीवन सदस्य थे ।*

जाट सभा का समस्त परिवार उनके दुखद निधन पर अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देकर शोक सतप्त परिवार को इस असहनीय आघात को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

एक सच्चे, सैनिक को सेन्य और आध्यात्मिक प्रशिक्षण, दोनों की ही जरूरत होती है। –सुभाष चंद्र बोस

भगत के वश में है भगवान

धन्ना जाटः किसी समय एक गांव में भागवत कथा का आयोजन किया गया। एक पंडित जी भागवत कथा सुनाने आए। पूरे सप्ताह कथा वाचन चला। पूर्णाहुति पर दान दक्षिणा की सामग्री इकट्ठा कर घोड़े पर बैठकर पंडितजी रवाना होने लगे। उसी गांव में एक सीधा–साधा गरीब किसान भी रहता था, जिसका नाम था धन्ना जाट। धन्ना जाट ने उनके पांव पकड़ लिए।

वह बोला– पंडित जी महाराज!

आपने कहा था कि जो ठाकुरजी की सेवा करता है, उसका बेड़ा पार हो जाता है। आप तो जा रहे हैं। मेरे पास न तो ठाकुरजी है, न ही मैं उनकी सेवा पूजा की विधि जानता हूं। इसलिए आप मुझे ठाकुरजी देकर पधारें।

पंडित जी ने कहा– चौधरी, तुम्हीं ले आना।

धन्ना जाट ने कहा– मैंने तो कभी ठाकुर जी देखे नहीं, लाऊंगा कैसे?

पंडित जी को घर जाने की जल्दी थी। उन्होंने पिण्ड छुड़ाने को अपना भंग घोटने का सिलबट्टा उसे दिया और बोले– ये ठाकुरजी हैं। इनकी सेवा पूजा करना।

धन्ना जाट ने कहा– महाराज में सेवा पूजा का तरीका भी नहीं जानता। आप ही बताएं।

पंडित जी ने कहा– पहले खुद नहाना फिर ठाकुरजी को नहलाना। इन्हें भोग चढ़ाकर फिर खाना।

इतना कहकर पंडित जी ने घोड़े के एड लगाई व चल दिए।

धन्ना सीधा एवं सरल आदमी था।

पंडित जी के कहे अनुसार सिलबट्टे को बतौर ठाकुरजी अपने घर में स्थापित कर दिया।

दूसरे दिन स्वयं स्नान कर सिलबट्टे रूप ठाकुरजी को नहलाया। विधवा मां का बेटा था। खेती भी ज्यादा नहीं थी। इसलिए भोग में अपने हिस्से का बाजरे का टिक्कड़ एवं मिर्च की चटनी रख दी।

ठाकुरजी से धन्ना ने कहा– पहले आप भोग लगाओ फिर मैं खाऊंगा। जब ठाकुरजी ने भोग नहीं लगाया तो बोला– पंडित जी तो धनवान थे। खीर–पूड़ी एवं मोहन भोग लगाते थे। मैं तो गरीब जाट का बेटा हूं, इसलिए मेरी रोटी चटनी का भोग आप कैसे लगाएंगे? पर साफ–साफ सुन लो मेरे पास तो यही भोग है। खीर–पूड़ी मेरे बस की नहीं है। ठाकुरजी ने भोग नहीं लगाया तो धन्ना भी सारा दिन भूखा रहा। इसी तरह वह रोज का एक बाजरे का ताजा टिक्कड़ एवं मिर्च की चटनी रख देता एवं भोग लगाने की अरजी करता। ठाकुरजी तो पसीज ही नहीं रहे थे। यह क्रम निरंतर छह दिन तक चलता रहा।

छठे दिन धन्ना बोला– ठाकुरजी, चटनी रोटी खाते क्यों शर्माते हो? आप कहो तो मैं आंखे मूंद लू फिर खा लो। ठाकुरजी ने फिर भी भोग नहीं लगाया तो नहीं लगाया। धन्ना भी भूखा प्यासा था। सातवें दिन धन्ना जाट बुद्धि पर उतर आया। फूट–फूट कर रोने लगा एवं कहने लगा कि सुना था आप दीन–दयालु हो, पर आप भी गरीब की कहां सुनते हो, मेरा रखा यह टिक्कड़ एवं चटनी आकर नहीं खाते हो तो मत खाओ। अब मुझे भी नहीं जीना है, इतना कह उसने सिलबट्टा उठाया और सिर फोड़ने को तैयार हुआ, अचानक सिलबट्टे से एक प्रकाश पुंज प्रकट हुआ एवं धन्ना का हाथ पकड़ कहा– देख धन्ना मैं तेरा चटनी टिक्कड़ खा रहा हूं। ठाकुरजी बाजरे का टिक्कड़ एवं मिर्च की चटनी मजे से खा रहे थे।

जब आधा टिक्कड़ खा लिया तो धन्ना बोला– क्या ठाकुरजी मेरा पूरा टिक्कड़ खा जाओगे? मैं भी छह दिन से भूखा प्यासा हूं। आधा टिक्कड़ तो मेरे लिए भी रखो।

ठाकुरजी ने कहा– तुम्हारी चटनी रोटी बड़ी मीठी लग रही है तू दूसरी खा लेना।

धन्ना ने कहा– प्रभु! मां मुझे एक ही रोटी देती है। यदि मैं दूसरी लूंगा तो मां भूखी रह जाएगी।

प्रभु ने कहा– फिर ज्यादा क्यों नहीं बनाता।

धन्ना ने कहा– खेत छोटा सा है और मैं अकेला।

ठाकुरजी ने कहा– नौकर रख ले।

धन्ना बोला– प्रभु, मेरे पास बैल थोड़े ही हैं, मैं तो खुद जुतता हूं।

ठाकुरजी ने कहा– और खेत जोत ले।

धन्ना ने कहा– प्रभु, आप तो मेरा मजाक उड़ा रहे हो। नौकर रखने की हैसियत हो तो दो वक्त रोटी ही ना खा लें हम मां–बेटे।

इस पर ठाकुरजी ने कहा– चिंता मत कर मैं तेरी सहायता करूंगा। कहते हैं तबसे ठाकुरजी ने धन्ना का साथी बनकर उसकी सहायता करनी शुरू की। धन्ना के साथ खेत में कामकाज कर उसे अच्छी जमीन एवं बैलों की जोड़ी दिलवा दी। कुछ अर्से बाद घर में गाय भी आ गई। मकान भी पक्का बन गया। सवारी के लिए घोड़ा आ गया। धन्ना एक अच्छा खासा जमींदार बन गया। कई साल बाद पंडित जी पुनः धन्ना के गांव भागवत कथा करने आए।

धन्ना भी उनके दर्शन को गया, प्रणाम कर बोला– पंडितजी, आप जो ठाकुरजी देकर गए थे, वे छह दिन तो भूखे प्यासे रहे एवं मुझे भी भूखा प्यासा रखा। सातवें दिन उन्होंने भूख के मारे परेशान होकर मुझ गरीब की रोटी खा ही ली। उनकी इतनी कृपा है कि खेत में मेरे साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर काम में मदद करते हैं। अब तो घर में गाय भी है। सात दिन का घी–दूध का 'सीधा' यानी बंदी का घी–दूध मैं ही भेजूंगा।

पंडितजी ने सोचा मूर्ख आदमी है। मैं तो भांग घोटने का सिलबट्टा देकर गया था। गांव में पूछने पर लोगों ने बताया कि चमत्कार तो हुआ है। धन्ना अब वह गरीब नहीं रहा। जमींदार बन गया है।

दूसरे दिन पंडितजी ने धन्ना से कहा– कल कथा सुनने आओ तो अपने साथ अपने उस साथी को लेकर आना जो तुम्हारे साथ खेत में काम करता है।

घर आकर धन्ना ने प्रभु से निवेदन किया कि कथा में चलो तो प्रभु ने कहा– मैं नहीं चलता तुम जाओ।

धन्ना बोला– तब क्या उन पंडितजी को आपसे मिलाने घर ले आऊ।

प्रभु ने कहा– बिल्कुल नहीं।

मैं झूठी कथा कहने वालों से नहीं मिलता।

जो मुझसे सच्चा प्रेम करता है और जो अपना काम मेरी पूजा समझ करता हैं मैं उसी के साथ रहता हूं।

सत्य ही कहा गया है भगत के वश में है भगवान।

जुआ सुख, संपत्ति और समय इन तीनों का, जो जीवन के लिए अति मूल्यवान है, नाश करता है। –अज्ञात

आदर्श जसनाथी (जाट) के अनुपालनिय कार्य

राकेश सरोहा

सिद्धाचार्य जसनाथ जी 15वीं 16वीं शताब्दी में उत्पन्न हुए राजस्थान के महान सामाजिक तथा धार्मिक सुधारक थे। उन्होंने उतरी राजस्थान में अपनी शिक्षा का प्रचार किया तथा समाज के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे न केवल सुधारक थे बल्कि महान संत भी थे। उन्होंने हवन, योगाभ्यास और नाम स्मरण को अपनी साधना पद्धति में शामिल करके जसनाथी पंथ (संप्रदाय) की स्थापना की। उन्होंने समाज के नैतिक स्तर को मजबूत बनाने के लिए अहिंसा, सदाचार, उपासना तथा शुद्धि के बारे में कुछ रचनात्मक निर्देश भी दिये थे। जसनाथ जी ने अपने अनुयायियों के लिए कुछ नियमों का पालन करना भी अनिवार्य ठहराया था। इस प्रकार सिद्ध जसनाथ जी ने एक संप्रदाय में दीक्षित किया। परंतु वर्तमान समय में जसनाथी संप्रदाय धीरे–धीरे अपनी गरिमा व सम्मान खोता जा रहा है। आज जसनाथी संप्रदाय के बहुत से लोग सिद्ध जसनाथ जी द्वारा प्रतिपादित नियमों की अवहेलना कर रहे हैं तथा मन वचन तथा कर्म से इन नियमों के विपरीत आचरण कर रहे हैं। जिसके कारण उनके जीवन में सामाजिक कुरीतियों तथा अनैतिक आचरण की धूल जम गई है, जोकि उनके समग्र विकास में बहुत बड़ी बाधा है। आर्थिक संपन्नता प्राप्त करना ही विकास का पैमाना नहीं है। सदाचार, शांति, संतोष तथा शील ही वास्तविक विकास के प्रमुख तत्व हैं। सिद्ध जसनाथ जी ने एक श्रेष्ठ जीवन के लिए प्रत्येक जसनाथी के लिए कुछ नियम व सिद्धांतों का पालन करना निर्धारित किया था। अतः वर्तमान समय में एक आदर्श जनसाथी के लिए कुछ प्रमुख अनुपालनीय कार्य निम्न प्रकार से हैं।

1. प्रत्येक जसनाथी को पर्व आदि पर 'चलू' पान आवश्यक रूप से करना चाहिये।
2. सिद्धों को अपने माथे पर भगवे रंग का साफा या पगड़ी धारण करनी चाहिए।
3. प्रत्येक जसनाथी को आश्विन, माघ व चैत्र शुक्ला सप्तमी तथा चतुर्थी के पर्व परंपरागत ढंग से मनाने चाहिए तथा उस दिन 'बाडी' में देव–दर्शनार्थ आवश्यक रूप से जाना चाहिए।
4. प्रातः व सायं मंदिर में या अपने घर पर हवन करना चाहिये अथवा प्रातः सायंकालीन संध्या वंदना के समय धूप अवश्यमेव करनी चाहिए।
5. सिद्ध जसनाथ जी द्वारा प्रतिपादित 36 नियमों का पालन करना चाहिए।
6. जसनाथी नियमानुसार नामकरण संस्कार, गुरूदीक्षा तथा अंतिम संस्कार परंपरा पद्धति से करने चाहिए।
7. गुरुमंत्र लेकर जसनाथी धर्म की दीक्षा लड़के व लड़कियों को अवश्य लेनी चाहिए जिसे साधारणतया गुरुभाव लेना कहते हैं।
8. अदैतवादी और त्यागी जसनाथी को गुरु धारण करना चाहिए।
9. जसनाथी संप्रदाय का अभिवादन वाक्य 'ओम नमो आदेश' कहकर ही अभिवादन करना चाहिये।
10. प्रत्येक जसनाथी को अपने गले में काली ऊन का त्रिग्रंथी मुक्त 'धागा' धारण करना चाहिए।
11. प्रत्येक मास की शुक्ला सप्तमी और शुक्ला चतुर्थी जसनार्थी संप्रदाय की पुण्य तिथियां हैं। इन तिथियों में अहिंसा का पूर्ण पालन करना चाहिए।
12. प्रत्येक जसनाथी को पक्षियों के चुग्गे पानी का प्रबंध अवश्य करना चाहिये।
13. प्रत्येक जसनाथी को अपने जीवन में कम से कम एक बार गंगा स्नान अवश्य करना चाहिये।
14. जसनाथी को गांव में संप्रदाय के पूज्य पुरुष पधरे तथा जसनाथी साधु आये तो उन्हें निमंत्रित कर अपने घर भोजन करवाना चाहिये।
15. प्रत्येक जसनाथी को उतम कार्य करते रहना चाहिये, जिन कार्यों को विधि एवं शास्त्र–सम्मत माना गया हो और जिनके करने से संपूर्ण सृष्टि में सुख एवं शांति का साम्राज्य स्थापित हो ऐसे कार्य उतम माने जाते हैं।
16. प्रत्येक जसनाथी को ऐसे मार्ग पर चलना चाहिए जिससे स्व धर्म का पालन हो सके।
17. भूखा मरने पर भी किसी जीव का भक्षण व मास भक्षण नहीं करना चाहिए।
18. प्रत्येक जसनाथी को साफ, स्वच्छ व सुव्यवस्थित केश रखने चाहिए।
19. प्रत्येक जसनाथी को भोजन काल से पूर्व स्नान करना परम आवश्यक है, स्नान करने से शरीर में तेज बढ़ता है। रूप सुंदर होता है तथा शरीर और मन को स्फूर्ति मिलती है।
20. प्रत्येक जसनाथी को शील धर्म का पालन, सदाचार तथा संयम रखना चाहिये।
21. प्रत्येक जसनाथी को अग्नि पूजा के साथ होम जाप करना चाहिये। हवन करने से देवगण प्रसन्न होते हैं तथा मनुष्य का स्वर्ण की प्राप्ति होती है।
22. प्रत्येक जसनाथी को आनदेवा की पूजा अराधना नहीं करनी चाहिए तथा पाखण्डों व अंध विश्वासों से दूर रहना चाहिये।
23. जसनाथी को दुध तथा पानी को कपड़े से छान कर सेवन करना चाहिये।
24. प्रत्येक जसनाथी को प्रत्येक स्थिति में जीवों की रक्षा करनी चाहिए।
25. जसनाथी को हरिहर की उपासना करनी चाहिये।

मेहनत की फसल आप ही काटेंगे, सदैव ऐसा नहीं होता। हम आम खाते हैं पर पेड़ हमने नहीं लगाए थे। –लोकमान्य तिलक

26. प्रत्येक जसनाथी को ब्याज प्रतिब्याज का परित्याग करना चाहिये।
27. प्रत्येक जसनाथी को अपनी आय का बीसवां भाग परामर्थ के कार्यों में लगाना चाहिये।
28. प्रत्येक जसनाथी को तंबाकू वगैरह के नशों, भांग, शराब व लहसुन का सेवन नहीं करना चाहिये।
29. प्रत्येक जसनाथी को साटियों से पशुओं के आदान–प्रदान करने के संबंध में किसी प्रकार का सौदा नहीं करना चाहिये।
30. प्रत्येक जसनाथी को पशुओं पर किसी भी प्रकार की क्रुरता नहीं करनी चाहिये बल्कि उनके जीवन की रक्षा करनी चाहिये।
31. प्रत्येक जसनाथी को मन में दया तथा धर्म का भाव रखना चाहिये।
32. प्रत्येक जसनाथी को अपने माता–पिता, आचार्य (गुरु) और अतिथि को आदर मान देकर उसका सत्कार करना चाहिये।
33. जसनाथी को व्यर्थ के वाद–विवाद से बचना चाहिये। व्यर्थ के वाद विवाद से क्रोध पैदा होता है जो सब प्रकार के दुखों का जनक है।
34. प्रत्येक जसनाथी को निंदा, कपट, मिथ्या भाषण व चुगली जैसे अवगुणों का परित्याग करना चाहिये।
35. प्रत्येक जसनाथी को चोरी–जारी दुष्कर्मों का मन, वचन और कर्म से ज्योग करना चाहिये।
36. प्रत्येक जसनाथी को रजस्वला स्त्री (पत्नी) को पांच दिन तक तथा परस्त्री को कभी स्पृश नहीं करना चाहिये।
37. प्रत्येक जसनाथी को अपने परिवार में हुए जन्म व मरण पर 10 दिन तक शौक (सूतक) मनाना चाहिये।
38. प्रत्येक जसनाथी को अपने कुल की काट या निंदा नहीं करनी चाहिये।
39. जसनाथी परिवार में मृत्यु होने पर शव को उदक भूमि अर्थात पवित्र भूमि बाड़ी में गाड़ना चाहिये।
40. प्रत्येक जसनाथी को बुरी संगत से बचना चाहिये।
41. प्रत्येक जसनाथी को वन्य प्राणी हरिण तथा पशु पक्षियों की रक्षा करनी चाहिये। हरिण तथा कबूतर अहिंसक प्राणी है। पर्यावरण को संतुलित रखने में इनका बड़ा योगदान है।
42. प्रत्येक जसनाथी को मोक्ष प्राप्ति हेतु शुद्ध सदाचार तथा जीवन पद्धति का पालन करना चाहिये।
43. प्रत्येक जसनाथी को सामाजिक कुरीतियों का त्याग करना चाहिये।
44. प्रत्येक जसनाथी को चाहिये कि वह अपने बच्चों को अच्छी प्रकार से शिक्षा दिलवाये तथा उन्हें सदाचार तथा सच का पाठ पढ़ाये।
45. प्रत्येक जसनाथी को मात्र अपने विकास के बारे में ही प्रयत्न नहीं करना चाहिए, बल्कि सभी जसनाथी समाज के विकास के लिए कार्य करना चाहिये।
46. प्रत्येक जसनार्थी को पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिये तथा पृथ्वी पर अधिक से अधिक हरित वृक्ष लगाने चाहिये तथा उनकी सुरक्षा करनी चाहिये।
47. प्रत्येक जसनाथी में अपने देश की रक्षा करने व देश के लिए बलिदान देने की भावना होनी चाहिये।
48. प्रत्येक जसनाथी को अपने परिवार, समाज तथा देश के लिए अधिक से अधिक मेहनत करनी चाहिये तथा अपने बच्चों में मेहनत, हिम्मत, सदाचार तथा संस्कारी होने का गुण विकसित करना चाहिये।
49. प्रत्येक जसनाथी को चाहिये कि वह समाज के प्रत्येक प्राणी से मित्रभाव से व्यवहार करे।
50. प्रत्येक जसनाथी को अपनी संतान का चूडांत संस्कार करने और विवाह उपरांत 'गढ जोड़े की जात' देने जसनाथी धाम पर अवश्य जाना चाहिये।
51. प्रत्येक जसनाथी को सिद्ध जसनाथ जी द्वारा प्रतिपादित नियमों व शिक्षाओं का मन, वचन व कर्म से पालन करना चाहिऐ तथा अपनी जीवन पद्धति में सच्चाई, मेहनत व ईमानदारी जैसे गुणों को अपनाकर किसी भी प्रकार के भ्रष्ट आचरण से दूर रहना चाहिए।

इस प्रकार जो जसनार्थी उपरोक्त नियमों व शिक्षाओं का मन, वचन तथा कर्म से पालन करता है तथा इन सिद्धांतों को अपने जीवन के व्यवहारिक कार्यों में अपना लेता है वह आदर्श जसनाथी कहलाने के योग्य है। आदर्श जसनाथी समस्त समाज के लिए प्रेरणादायी होगा तथा आदर्श समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण आधार स्तंभ होगा। आज जसनाथी समाज सिद्ध जसनाथ जी द्वारा दिखाये गये मार्ग से पथभ्रष्ट होता जा रहा है। आओ हम सब मिलकर जसनाथी समाज में आयी कुरीतियों, अवगुणों व गलत प्रथाओं को समाप्त करने के लिए संगठित होकर महाअभियान चलाये तथा आदर्श जसनाथी बनकर आदर्श जसनाथी समाज की स्थापना करें।

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl 24-04-1987/5' M.A. English, She has own Business with I.C.I.C.I prudencial (Insurance, Mutual Fund, Investment) Earining 4 to 5 Lacs P.A., Prefer Chandigarh sarrounding area. Avoid Gotras: Attri, Bohare (Nader). Cont.: 9988268021, 9996868755*
- *SM4 Jat Girl 24/5'2", B.A. Final year live in Chandigarh, Avoid Gotras: Malik, Pahal. Cont.: 7696564170, 9780741535*
- *SM4 Jat Girl 23/5'5", B.Sc. Final year live in Chandigarh, Avoid Gotras: Malik, Pahal. Cont.: 7696564170, 9780741535*
- *SM4 Jat Boy 28/5'11", B.Tech., M.Tech., working as Planner in Reputed Company, Gurgaon, Avoid Gotras: Sangwan, Gulia, Bagiya. Cont.: 09467923726, 09466016340*

जाट संस्कृति एवं समस्याएं

प्रारंभ से ही इस महान जाट कौम का गौरवमयी व वीरतापूर्ण इतिहास रहा है। देश की आजादी के लिए किए गए विभिन्न प्रयासों व 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भी इस गौरवशाली कौम का अहम् योगदान रहा है। राजा नाहर सिंह, शहीद भगत सिंह, सोनीपत के चौ. उद्यमी राम जैसे कौम के अनेकों रणबांकुरों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए और स्वतंत्रता के पश्चात भी देश की आन–बान व सुरक्षा को कायम रखने के लिए लड़ी गई तमाम लड़ाईयों में इस महान कौम के शुरवीरों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और इस कौम के अनेक सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। अकेले कारगिल युद्ध में केवल हरियाणा से इस वर्ग के 80–85 युद्धवीरों ने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए। राष्ट्र की अखंडता, प्रभुसत्ता को सदैव सुरक्षित रखने हेतू भी जाट समाज ही सर्वोत्तम कुर्बानी देता रहा है और इसके लिए तत्पर भी रहता है। सैनिक इतिहास एवं देश का इतिहास इस बात का गवाह है। 1946–47, 1962, 1965, 1971, कारगिल युद्ध व अन्य आंतरिक सुरक्षा हेतू सुरक्षा बलों द्वारा की गई व की जा रही कार्यवाहियों के दौरान घटित घटनाओं के आंकड़े भी इस तथ्य को सिद्ध करते हैं।

इस बहादुर कौम की वीरता के जज्बों व साहस के संदर्भ में स्व. प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी कहा था कि दिल्ली के आसपास एक ऐसी बहादुर कौम (जाट) निवास करती है जो परस्पर मिल जाए तो दिल्ली पर कब्जा कर सकती है। इस कौम की बहादुरी व स्वतंत्रता प्रेम की प्रशंसा करते हुए भूतपूर्व राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन ने बरेली जाट रेजीमैंट में अपने एक कार्यक्रम के दौरान कहा था कि पश्चिम में फ्रांस से लेकर पूर्व में चीन तक ''जाट बलवान, जय भगवान'' का रणघोष गुंजता रहा है और यह नारा रेजीमैंट द्वारा प्रत्येक युद्ध में प्रवेश से पहले बुलंद किया जाता है। अंग्रेजी शासनकाल के शुरू में जब ब्रिटिश ताकतें अपनी सत्ता तक क्षेत्रफल बढ़ाने में लगी थी तो उनका सामना हिंदू जाटों से हो गया, व उन्होंने महसूस किया कि जाट व जट सिक्खों का सामना करने में उनको काफी कठिनाईयां झेलनी पड़ी तो उन्होंने इस समाज की वीरता से प्रभावित होकर इनको बंगाल सेना में भर्ती करना शुरू कर दिया और वर्ष 1803 में 22वीं बंगाल नेटिव इनफैंटरी का गठन कर दिया जो कि बाद में जाट रेजीमैंट में बदल दी गई।

कर्तव्यपरायणता, ईमानदारी, निष्पक्षता व वीरता का जज्बा सदैव इस वर्ग के संस्कारों व सदाचार में रहा है जिस कारण अधर्म व अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाना शुरू से ही हमारी फितरत में रहा है। इसलिए जाट संस्कृति के महत्वपूर्ण नियम– 1. मानवतावादी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण शिक्षा, विकास एवं सकारात्मक विचार, कृषि पर्यावरण प्रेम, 2. राष्ट्र–संविधान, विधि व्यवस्था का परिपालन, देशप्रेम व राष्ट्रहित की भावना, 3. श्रेष्ठ परंपराएं एवं मान्यताएं, वीर परिश्रमी स्वभाव, अच्छा स्वास्थ्य, कुशल सद्व्यवहार, 4. देश, काल, परिस्थिति के अनुरूप जीवन यापन एवं यथासंभव शाकाहारी भोजन, 5. सबसे भाईचारा, समानता, यथायोग्य व्यवहार, दुर्जनों से सतर्कता–यथासमय प्रतिकार, 6. विभिन्न विचारधाराओं में आस्थावान जाट संस्कृति जनों पर परस्पर एकता, सदभावना, 7. विसमगोत्रीय विवाह प्रचलन, कन्या भ्रूण विनाश वर्जित, नशा मुक्ति, निंदा–विवाद परित्याग, 8. संयुक्त परिवार, जाट संस्कृति विवाह, अतिथि सत्कार, विद्वान, वृद्धजन, नारी सम्मान, 9. परिवार में समृद्धि, संस्कार, सुख, शांति का वातावरण, माता–पिता सेवाभाव, 10. गौरवशाली अतीत, जाट संस्कृति, जाट महापुरूष, तीर्थ, ध्वज के प्रति श्रद्धाभाव, 11. जाट संस्कृति उन्नयन, पूर्णमासी को जाट कथा–मांगलिक पाठ व्रत, शुभायोजन आदि आरंभ से ही इस गौरवशाली वर्ग के उचित मार्गदर्शन व सदाचारी संस्कारों को बनाए रखने में रामबाण रहे हैं और रहेंगे। शुभायोजन आदि आरंभ से ही इस गौरवशाली वर्ग के उचित मार्गदर्शन व सदाचारी संस्कारों को बनाएं रखने में रामबाण रहे हैं और रहेंगे;

शत्रु देशों के विरूद्ध लड़ी गई हर लड़ाई में इस कौम के बहादुरों की अहम् भूमिका रही है।

इस कौम के बहादुर जांबाज रिसालदार बदलू सिंह को सर्वप्रथम 23 सितंबर 1918 में व सुबेदार रिछपाल लांबा को 7 फरवरी 1941 को सेना में सर्वोत्तम सम्मान व बहादुरी के लिए दिए जाने वाले 'विक्टोरिया क्रास' से नवाजा गया था। सेना में वीरता व उत्कृष्ठ कामयाबी के लिए दिए जाने वाले विभिन्न इनामों– परमवीर चक्र, महाबीर चक्र, वीर चक्र, पदमभूषण, उत्तम युद्ध सेवा मैडल, कीर्ति चक्र, शौर्य चक्र, सेना मैडल, अशोक चक्र, मिल्ट्री क्रास, परम विशिष्ट सेवा मैडल, विशिष्ट सेवा मैडल आदि के विजेताओं के क्षेत्रों में भी इस समाज से 100 से अधिक शूरवीरों को सम्मान दिया गया है जिसमें परमवीर चक्र विजेता कर्नल होशियार सिंह, महाबीर चक्र विजेता सुबेदार चुनीराम फगेड़िया, इंडो पाक युद्ध के शहीद दयानंद सांगवान वीर चक्र विजेता, कारगिल युद्ध के वीर चक्र विजेता शीश पाल गिल आदि की बहादुरी व शहादत समाज व राष्ट्र के युवाओं के लिए सदैव प्रेरणा स्त्रोत बनी रहेगी।

खेल व समाज सेवा के क्षेत्र में भी इस समाज का आरंभ से ही विशेष रूतबा रहा है। वर्तमान में भी कामनवैल्थ खेल 2010 में कुल 101 मैडल विजेताओं में से हरियाणा के कुल 32 विजेताओं में 24 पुरूष व महिला खिलाड़ी जाट वर्ग से हैं। विश्व कुश्ती चैंपियन रहे अभिनेता दारा सिंह, स्व. मास्टर चंदगीराम जैसे खिलाड़ी विश्व स्तर पर अपने शौर्य का प्रदर्शन कर चुके हैं। समाज में सदभावना, भाईचारा कायम रखने व जनहित में समाज सेवा के लिए भी इस वर्ग के महापुरूषों की अलग से पहचान रही है। इस समाज में गरीब–दलित नेता स्व. दीन बंधु सर छोटू राम, समाज सेवा व दानवीर स्व. चौ. छाजू राम निष्कपट व अत्यंत सादगी प्रिय जुझारू नेता उप प्रधानमंत्री जन नायक स्व. चौ. देवीलाल व देश के पूर्व प्रधान मंत्री चौ. चरण सिंह आदि ऐसे महापुरूष हुए हैं जो कि अपनी समाज सेवा, ईमानदार व निष्पक्ष सेवा भाव छवि के लिए समस्त राष्ट्र में किसान, कामगार एवं

जीवन में, विशेषकर राजनीति में, कोई चीज इतनी हानिकर और खतरनाक नहीं है जितना की डावाडोल स्थिति मे रहना। –सुभाष चंद्र बोस

काश्तकार के कल्याण एवं हितों के लिए एक मशाल तथा सूत्रधार बने रहेंगे। इस बहादुर समाज में महाराजा रणजीत सिंह, महाराजा सुरजमल, महाराणा महेंद्र प्रताप सिंह, महाराजा जवाहर सिंह, महारानी किशोरी बाई, राणा भीम सिंह, निर्भिक यौद्धा राजा रामजी जैसे बहादुर व कुशल प्रशासक एवं समाज चिंतक सागर राज जी, महान पुरातत्व विज्ञाता स्वामी ओमानंद, लोक देवता परमवीर तेजा जी, वीर अमर ज्योति गोकुल जी, निर्भय शूरवीर हरफूल सिंह, भगत शिरोमणी धन्ना जी जैसे समाज सुधारक व न्यायप्रिय महापुरूष हुए हैं जिनकी लोकप्रियता व बहादुरी के किस्से समस्त राष्ट्र के लिए मार्ग दर्शक बने रहेंगे।

समाज के विख्यात गरीब व किसान नेता दीनबंधु सर छोटूराम ने ग्रामीण क्षेत्र के काश्तकार व गरीब वर्ग के उत्थान व कल्याण के लिए संघर्ष करने के अलावा परतंत्रता के प्रतिकूल परिस्थितियों में महा पंजाब में हिंदु, मुस्लिम, सिक्खों में सदभावना व भाईचारा कायम रखने के लिए ऐसे समय में संघर्ष किया जब ब्रिटिश हकूमत व इसकी शाह पर पनप रही सांप्रदायिक शक्तियों देश को विभाजित व विखंडित करने में लगी हुई थी। इसी प्रकार स्व. उप प्रधानमंत्री चौ. देवीलाल ने स्वार्थी व मौकापरस्त नेताओं की कारगुजारी के विरूद्ध जन साधारण को जागरूक करते हुए अपने कार्यकाल में जनहित में विभिन्न समाज कल्याणकारी योजनाएं शुरू करके एक निष्पक्ष व स्वच्छ राजनीति का मार्गप्रशस्त किया लेकिन अफसोस है कि आज इस प्रकार के जनप्रिय व निस्वार्थ नेताओं का पूर्णतया अभाव है, जिस कारण उचित मार्गदर्शन व प्रतिनिधित्व न होने के कारण जनहित में उठाई जाने वाली प्रत्येक आवाज को बलपूर्वक दबा दिया जाता है।

यह बहुत चिंता का विषय है कि इस मेहनतकश व बहादुर वर्ग की छवि आज लगातार खराब हो रही है। हम अपनी प्राचीन व परंपरागत पहचान को भूलते जा रहे हैं। हम अपने प्राचीन रीति–रिवाजों व संस्कारों से हटते जा रहे हैं। आधुनिक होना अच्छी बात है लेकिन आधुनिकता की दौड़ में अपनी प्राचीन धरोहर व संस्कृति का मान–सम्मान भी आवश्यक है जिसका नुकसान आज हमें 'ऑनर किलिंग' जैसे कलंक के तौर पर भुगतना पड़ रहा है। हमारी एक दूसरे की जी जान से मदद करने व पारस्परिक भाईचारे की मौलिक संवेदना खत्म हो रही है। इसकी बजाए मौकापरस्त व स्वार्थी तत्वों की संलिप्तता के कारण हममें एक दूसरे को नीचा दिखाने व कोरी राजनीति चमकाने की प्रवृति बढ़ रही है। जो समाज कभी सुदृढ़ता व एकजुटता के लिए मिसाल के तौर पर जाना जाता था आज वह बिखरा नजर आ रहा है और अपनी–अपनी डफली अपना–अपना राग के कारण अवन्नति की ओर जा रहा है।

आज हमारे सामने एकता/संगठन में बिखराव के साथ–साथ अनेकों समस्याएं मुंह बाये खड़ी हैं। बेरोजगारी की समस्या इस वर्ग के लिए सबसे विनाशकारी सिद्ध हो रही है। शैक्षणिक सुविधाएं नाममात्र की हैं जिससे ग्रामीण बेरोजगारी विशेषकर जाट बेरोजगार युवकों की नफरी बढ़ती जा रही है क्योंकि अन्य वर्गों को तो आरक्षण के अलावा अन्य शैक्षणिक सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। बेरोजगारी की मार व खेती की जमीन न रहने के कारण आज इस वर्ग की हालत दयनीय होती जा रही है और मुख्यतः कृषि पर आधारित इस समाज के लोग आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहे हैं।

स्त्री–**पुरूष लिंग अनुपात लगातार घट रहा है। भ्रूण–हत्या जैसे घोर पाप व संगीन अपराध दिन प्रति दिन बढ़ रहे हैं। बेरोजगार युवाओं की शादी ना होने की वजह से दूसरे प्रांतों एवं देशों से महिलाओं को खरीदकर लाने की घटनाएं और इस संबंध में छल–कपट के अपराध भी इसी कौम को जकड़ रहे हैं। यह भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज यह गौरवपूर्ण व शक्तिशाली वर्ग अपनी लगातार हो रही दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत ओबीसी कोटे के अंतर्गत आरक्षण पाने के लिए संघर्ष कर रहा है और उचित संगठन की कमी व सरकारी भेदभावपूर्ण रवैये के कारण उनका यह आंदोलन पिछड़ता जा रहा है। इससे भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज अन्य जातियों के कुछ संगठन व कुछ व्यक्ति इकट्ठे होकर जाट आरक्षण का पुरजोर विरोध करके जगह–जगह पर ज्ञापन दे रहे हैं। यहां तक कि आरक्षण के लिए चलाए गए रेल रोको आंदोलन को खत्म कराने के लिए जनहित याचिका दायर कर दी गई जबकि इतिहास साक्षी है कि आज तक जाटों ने किसी भी जाति या वर्ग को मिलने वाले आरक्षण या अन्य सुविधाओं का विरोध नहीं किया है। जाट तो केवल अपने जैसे अन्य खेतीहर जातियों के साथ आरक्षण सूची में शामिल करने की मांग कर रहे हैं जो कि पूर्णतया न्यायोचित है और उनको आरक्षण न देना इस गौरवशाली कौम के सम्मान का घोर अपमान है। उपरोक्त के अलावा आरक्षण के नाम पर भी इस वर्ग के साथ दोगला व्यवहार किया जा रहा है। एक पिछड़े वर्ग का व्यक्ति प्रत्येक स्थान पर अपने पिछड़े वर्ग के आरक्षित कोटे में आंका जाता है जबकि जाट वर्ग से संबंधित व्यक्ति को एक स्थान पर पिछड़ा व उसी व्यक्ति को अन्य स्थान पर रहने की दशा में स्वर्ण जाति से माना जाता है यानि जाट वर्ग के संबंध में दो मापदंड अपनाएं जा रहे हैं जो कि उसके सम्मान के साथ खिलवाड़ के इलावा संविधान द्वारा प्रदत्त समानता के अधिकार के विरूद्ध है। आज मुस्लिम वर्ग की आबादी 18 करोड़ होने के बावजूद भी उनको अल्पसंख्यक मानकर 4.5 प्रतिशत आरक्षण दिया जा रहा है जबकि सारे राष्ट्र में जाटों की 3 करोड़ आबादी होने पर भी उन्हें अलपसंख्यक नहीं माना जा रहा है। समाज में भाईचारा, सदभावना, एकता का ग्राफ लगातार कम हो रहा है। इस मेहनतकश समाज की जीविका का साधन–पुस्तैनी धरती कम होकर बीघों तक सिमट गई है जो कुछ बची है वह भी हरियाणा, पंजाब जैसे प्राईम राज्यों के अधिक सुशिक्षित व तथाकथित नंबर वन कहलाने वाले मुख्यमंत्रियों द्वारा कौड़ियों के भाव छीनकर आगे मनमर्जी कीमतों पर बेची जा रही हैं। अन्य कोई धंधा हम कर नहीं सकते क्योंकि बेईमानी करना व झूठ, फरेब से कोई धंधा करना हमारे सिद्धांतों के विपरीत है। इस पर मुझे यह अफसोस होता है– सारी कौम तरक्की कर गई लड़के और झगड़े के, अन्नदाता तेरा हाल देखके मेरा कलेजा धड़के। सर छोटूराम कहा करते थे– हे भोले मानस (जाट) एक तो बोलना सीख ले और दुश्मन को पहचान ले। हम बोलना तो थोड़ा** बहुत सीख गए हैं लेकिन आज इस कौम के दुश्मन बहुत बढ़ गए हैं।

दुनिया बहुत कष्ट सहती है। बुरे लोगों की हिंसा के कारण नहीं, बल्कि अच्छे लोगों के मौन के कारण। –नैपोलियन

आज हमें दूसरों से ज्यादा अपनों से अधिक खतरा है। उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री महोदया सहित कई अन्य केंद्रीय मंत्रियों ने तो जाटों को आरक्षण देने का समर्थन किया है, जिनका जाट समाज बार–बार आभार व्यक्त करता है लेकिन हरियाणा प्रदेश के मुख्यमंत्री ने एक महीने तक चले संघर्ष व दो व्यक्तियों द्वारा इस संघर्ष में जान गंवाने के बावजूद संगठन की कमजोरी का फायदा उठाकर जाट आरक्षण आंदोलन की लीपा–पोती करके राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन कर दियां इस आयोग में जाट, जट सिक्ख, किसान व ग्रामीण वर्ग से कोई भी प्रतिनिधि शामिल नहीं किया गया और इस प्रकार आरक्षण के लिए संघर्ष, सरकार की ढुलमुल नीति की भेंट चढ़ जाएगा। अगर प्रदेश सरकार जाटों को आरक्षण देने के प्रति वाकई गंभीर है तो 1990 में गुरनाम सिंह आयोग द्वारा की गई सिफारिशों को फिर से नोटिफिकेशन करके लागू कर देना चाहिए।

आज इस कौम के साथ हर स्तर पर भेदभाव किया जा रहा है। सरकारी सेवाओं में पक्षपात, इस खेतीहर वर्ग की सरकारी अनदेखी, सेज के नाम पर जमीन हड़पना व राजनेताओं द्वारा झूठे सब्जबाग दिखाकर सत्ता हासिल करने के लिए इनका सदैव शोषण किया जाता रहा है। युद्ध के समय जाट, जट–सिक्ख, राजपूत आदि मार्शल कौम का नारा देकर इस बहादुर वर्ग की वीरता के जज्बातों को उजागर कर मरने के लिए इनको अग्रिम पंक्ति में झोंक दिया जाता है जबकि सरकारी सेवाओं में आरक्षण मांगने पर लाठी बल से दबा दिया जाता है। इस वर्ग द्वारा संचालित महत्वपूर्ण ग्रामीण संस्थाएं– खाप पंचायतें व सर्वखाप पंचायतों को ऑनर किलिंग के लिए जिम्मेवार करार देकर इस वर्ग को एक साजिश के तहत बदनाम किया जा रहा है। यह सर्वविदित है कि खाप पंचायतें प्राचीन काल से ही ग्रामीण समाज में भाईचारा कायम रखने, समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने, आपसी मनमुटाव व झगड़ों को पारस्परिक सुलह द्वारा पंचायत स्तर पर निपटाने आदि के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं लेकिन खाप पंचायतों विशेषकर जाटों द्वारा संचालित खापों को ऑनर किलिंग जैसे मसलों से जोड़कर राजनेताओं द्वारा मीडिया के सहयोग से इस कौम को बदनाम किया जा रहा है जबकि ऑनर किलिंग की घटनाएं हर वर्ग व समाज में घट रही हैं जोकि एक कानूनन अपराध है और इसकी रोकथाम के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। राष्ट्र के महापुरूषों व शूरवीरों के सम्मान के प्रति भी आज केंद्रीय व प्रदेश सरकारें गंभीर नहीं हैं। जाट कौम के 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के हीरो राजा नाहर सिंह, तात्या टोपे, राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीद भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव, प्रसिद्ध समाज सुधारक स्वामी विवेकानंद, सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि अनेकों महापुरूष है जिनके सम्मान में ना तो सरकारी अवकाश घोषित किया जाता है और ना ही इन महापुरूषों के नाम पर कोई राज्य या राष्ट्रीय स्तर की समाजसेवी संस्था या संगठन बनाया गया है। केवल एक विशेष परिवार के नामों पर ही विभिन्न समाजसेवी व कल्याणकारी संस्थाएं बनाई जा रही है जो कि इस गौरवशाली कौम के अलावा अन्य सभी महानुभावों के सम्मान के प्रति अन्याय है।

आज जाट समाज बिल्कुल दिशाहीन व नेतृत्वहीन हो चुका है। सुदृढ़ संगठन तथा उचित मार्गदर्शन के बिना आरक्षण समेत सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर हम पिछड़ते जा रहे हैं। इसलिए हमें एक बैनर के नीचे संगठित होकर आरक्षण के लिए लड़ाई लड़नी चाहिए।

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के सदस्यों के मेधावी छात्रों एवं उत्कृष्ट खिलाड़ियों को पुरस्कार

जाट सभा चंडीगढ़ के सदस्यों के जिन बच्चों ने बोर्ड एवं युनिवर्सिटी की परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त किए हैं तथा अन्य निम्न प्रतियोगी परीक्षाओं में योग्यता के आधार पर (बिना अनुदान) प्रवे ा प्राप्त किया है, ऐसे बच्चों को जाट सभी द्वारा पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार के लिए परीक्षा तथा प्राप्त अंक प्रति ात निम्न प्रकार से होगा।

आठवीं एवं दसवीं	85 प्रति ात या अधिक
बाहरवीं (आर्ट्स एवं कार्मस) बी.एत्र, बी.कॉम.	75 प्रति ात या अधिक
एम.ए., एम.कॉम, एल.एल.बी., एल.एल.एम.	75 प्रति ात या अधिक
बारहवीं (साइंस ग्रुप)	85 प्रति ात या अधिक
बी.एस.सी., एम.एस.सी.	85 प्रति ात या अधिक

(अतिरिक्त विशय के तौर पर पास किया गया *Math* का विशय साइंस ग्रुप के मान्य होगा) *IIM, IIT, AIIMS, REC, Chandigarh/ Rohtak/C.B.S.E. Medical College, Punjab Engineering College/Chandigarh College of Architecture, Chd.* इत्यादि प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रवे ा के लिए। उपरोक्त के अलावा, जिन सदस्यों या जिन बच्चों ने 01 जनवरी, 2015 से 31 दिसंबर 2015 तक खेल प्रतियोगिताओं में राज्य व राश्ट्रीय स्तर पर प्रथम, व द्वितीय तथा अंतरराश्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया है, ऐसे सभी मेधावी छात्रों एवं उत्कृश्ट खिलाड़ियों से अनुरोध है कि वे वर्श 2015 की परीक्षाओं में उपर्युक्त अंकों के सर्टिफिकेट/खेलों के सर्टिफिकेट 16 जनवरी, 2016 तक जाट सभा के कार्यालय में जमा करवा दें ताकि उनको सर छोटू राम जयंती, दिनांक 13 फरवरी, 2016 के अवसर पर सम्मानित किया जा सके।

जो मनुष्य के साथ दयालुता का बर्ताव नहीं करता, किंतु पूजा का दिखावा करता है, वह ढ़ोगी कहा जा सकता है। –अज्ञात

सुखमय जीवन जीने के कुछ अनमोल वाक्य

–डॉ. रणबीर सिंह संधू

सुख दुःख जीवन के दो पहलू हैं। सुखी उसको कहेंगे जो शरीर से मन से बाहय शरीर से स्वस्थ है, कोई बीमारी नहीं है, अच्छा परिवार माता–पिता व खुद धन, दौलत से सम्पन्न है, अच्छी गुणकारी सुंदर पत्नी है, अच्छा आज्ञाकारी पुत्र है व स्वयं भी सबके सेवा करने में तत्पर है वही परिवार व खुद सुखी है। पर अब इस संसार में ऐसे कितने परिवार मिलेंगे, यह भी गिने चुने। क्योंकि घर में कोई न कोई बीमार तो जरूर होता ही रहता, धन से भी सभी सम्पन्न नहीं हैं, किसी को किसी चीज की कमी तो कभी दूसरी चीज की कमी यह सब तो चलता ही रहता है, कोई किसी को हर समय तो सुखी कर ही नहीं सकता क्योंकि आज हर कोई किसी न किसी बात पर दुःखी है, छोटी सी बात पर कोई रूकावट आ जाये, या कभी अनजाने में गलत काम किसी से हो जाये या कोई दुर्घटना हो जाये तो इंसान दुःखी हो जाता है इसलिए सबसे पहले तो यह सोचो कि इस संसार में कभी एक विचार दूसरे के विचारों से मेल नहीं खाते, सभी की आदतें भी अलग–अलग, जब विचार व आदतें अलग हैं तो मिलाप कैसे हो सकता है, आज सभी दुखी ही दुखी घूम रहे हैं क्योंकि इच्छा अधिक, कर्म कम, देखा देखी इस आकर्षण के युग में सब कुछ पाने की इच्छा कर बैठता है, धैर्य बिल्कुल नहीं रखता बिना कुछकर ही छलांग में कुर्सी पर बैठना चाहता है। मन के Viberation भी Negative पर बाहय रूप से Positive बनकर दिखाते हुए सब कुछ जल्दी प्राप्त करने की दौड़ में दौड़ लगा रहा है। अब सब यह मारा मारी चली हुई है चापलूसी भ्रष्टाचार, घूसखोरी, धोखाधड़ी, लूटखसोट मची हुई है, कोई किसी पर भरोसा नहीं करता, वह खुद स्वयं पर भरोसा नहीं करता, बस यही कहता है कि मैं ही सबसे अधिक समझदार गुरूवान व सब कुछ जानने वाला हूं मेरे से अधिक कोई इसके बारे में नहीं जानता, क्या वह आदमी कभी सुखी रह सकता है जो दूसरों की छोटी–छोटी बातों में नुक्ताचीनी व दूसरों को नुकसान देने में सुख अनुभव करता हो, ऐसा इंसान दूसरों की कभी भलाई के बारे में नहीं सोच सकता, कहते भी हैं धन को अच्छा उसी समय मानें जब गरीब को बिना किसी झंझट के समय पर मिल जायें। अब 99 प्रतिशत Negative सोच से दुनिया दुःखी है, यह सोचता है कि मैं ही एक गुणकारी इंसान इस दुनिया में हूं, कभी ऐसा न सोचो सदा अच्छे अनुभव वाले के साथ मिलजुल कर बातों को ध्यान से सुनकर उस कार्य को एक दूसरे के Co-operation से एक लग्न लगाकर कार्य करेंगे तो सफलता हर हालात में मिलेगी। धैर्य रखे व Hard work करो तो सफलता जरूर मिलेगी।

कुछ मुख्य बातें जो जीवन को सुखमय बनाने में सहयोग करेंगी वह हैं:–

1. सवेरे अमश्तवेले 4 बजे से पहले उठकर दोनों हाथों की हथेलियां रगड़ते हुए 3–4 बार अपने माथे पर लगाये व सबसे पहले हथेलियों को देखें कि इन्हीं से सारे देवी–देवता, धन दौलत, तीर्थ मेरी सारे परिवार को सुखी जीवन इन्हीं में बसा हुआ, नमण करो कि मैं संसार का सबसे अधिक खुशनसीब भाग्यशाली इंसान हूं जिसे इतना अच्छा शरीर, परिवार, रिश्तेदार जानने वाले व पद प्राप्त है जो सभी को भी ऐसा मिले अनुभव करो।

2. इसके बाद आधा कि. गुनगुना पानी पीकर निवश्त्त हो जाओ, तथा 20 मिनट कम से कम ध्यान लगाओ कि मैं आत्मा हूं वह शरीर व संसार खत्म होने वाला है, वह सब कुछ बताने वाला है, अधिक इच्छा मत कर जो मिला हुआ है उसी कि संतुष्टि जरूरी है।

3. कभी भी भूलकर किसी का न तो बुरा करना है, ना सोचना है, सदा अच्छी सोच को बनाये रखना है, बुराई को अच्छाई में बदलने का नुस्खा सदा याद रखना है कि मैं स्वयं क्या हूं, मैं कभी भी किसी का बुरा नहीं सोच सकता, सब दूसरों कि भलाई का ही सोचना, अच्छी सोच सभी बीमारियों को ठीक करने का सबसे अच्छा नुक्ता है।

4. कोई भी कार्य मुश्किल मत समझ यही सोच कि यह तो कार्य बहुत आसान है यह तो हुआ ही पड़ा है, ना कोई कार्य बड़ा है, समय को पहचान, यह समय बड़ा मूल्यवान है इसकी एक–एक पल मूल्यवान है, धैर्य रखकर लग्न में मग्न खोकर कार्य करो तो कोई भी कार्य हो वह आसान ही दिखेगा, कार्य वह बड़ा लगता है, मन ने ठान लिया कि यह कार्य मुश्किल है, मन को बुद्धि से control कर तो कोई भी कार्य मुश्किल नहीं आसान दिखेगा।

5. कभी किसी कि बुराई मत कर, हर इंसान में अवगुण हैं, एक गुण को पहचान कर उसी की तारीफ कर अवगुणों को भूलकर भी मत देख, सदा वर्तमान में जीना सीख भूतकाल की अच्छाईयों को याद करते हुए दोहराएं बुराईयों को सदा के लिए ताले लगा दें कि यह तो कभी हुआ ही नहीं, भविष्य कि इतनी इच्छा कर वह पूरी हो जाये, वर्तमान की कठिन परिश्रम करते हुए तत्पर होकर एक परिश्रम व मेहनत करते हुए कार्य करोगे तो सफलता हर हालात में मिलेगी, कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता, कोई भी छोटे से छोटा कार्य करने में खुशी अनुभव करो कि यह कार्य तो हुआ ही पड़ा है।

6. चींटी, मकड़ी व घोड़े को देख जो दिन रात बिना थके ही कार्य में लगे रहते हैं, चींटी अपने से 100 गुणा वजन लेकर सरपट दौड़ती रहती है, कार्य करती है फल का इंतजार नहीं करती, इसी तरह मकड़ी भी जाल बुनती रहती है कि मेरा दावा दुनिया में सबसे लंबा है, इसका कोई माइना नहीं कर सकता, जिस तरह घोड़ा खड़े–खड़े ही सोता रहता है कभी थकता नहीं संसार में Horse Power की गणना कई जगह की जाती है, इसकी इतनी Power है, यह घोड़ा ही है जो चतुराई से अपना सिक्का सभी जगह जमा लेता है कहते भी हैं कि लेने वाले, ज्ञान का यह अनमोल खजाना खुद स्वयं करते हुए दूसरों को भी समान बनाने की प्रेरणा देते जाओ, तो संतुष्टता कृकृ जंगल में मंगल महसूस हो जायेगा।

दूसरों के अनुभव से होशियारी सीखने की मनुष्य की इच्छा नहीं होती, उसको स्वतंत्र ठोकर चाहिए। –विनोबा भावे

7. मन के बहाव में मत बहो, इसे बुद्धि रूपी चाबी से कहां बांध ा कर रखो, जो समय–समय पर निठल्ला बन जाता है, इसे Control करो, क्योंकि यह मन ही सब दुःखों की दवा है इसे Control करना सीख ले तो गाड़ी smooth धक्का शुरू कर देगी।

8. कभी किसी से द्वेष, घश्णा, दुश्मनी निकालने की कोशिश मत करो कि पीछे मेरे परिवार के किसी मनुष्य से यह गलत कार्य हो गया था, उसे Repeat करने की बजाये उसे सुधारने की कोशिश करो, मिलजुल कर कार्य को सुलझाने में ही भलाई है, यह ही सुखमय जीवन की कला को सीखने का शुभ अवसर है, इसे कभी हाथ से मत जाने दो, जिंदगी व समय की मिट्टी व्यापारी व सुहावनी याद में बिताने की कोशिश करो।

9. दूसरों कि भूलों को बार–बार Repeat मत करना उनको माफी देने के बजाय भूलों को, गल्तियों को सुधारने में ही सुखमय जीवन जीने का मजा आयेगा।

10. बातें कम से कम मिट्ठी, तोलकर, सोच समझकर करें तो ही अच्छा है, समय पर भूल सुधार कर अच्छी नसीहत देते उसी समय मजा आयेगा, जब गल्ती सुधार कर दोबारा न करें, यही प्रण करने में मजा आता है। तो सुख कि चाहत ही बंधन है, ज्ञान वह परम स्थिति है, जिसे पाकर कोई मोह में नहीं फंसता। यह आध्यात्मिक अवस्था अगर जीवन के अंतकाल में भी मिल जाए तो मोह की प्राप्ति हो सकती है। शरीर इससे झूठे सारे पदार्थ, सगे संबंधियों जहां से इस शरीर को सुख मिलता है, हमारा हर उस वस्तु से मोह हो जाता है, क्योंकि हम जिंदगी भर उस सुख में डूबा रहना चाहते हैं। और इसकी वजह से मोह पक्का होता जाता है, फिर एक ऐसी अवस्था आ जाती है कि सुख मिले या ना मिले, मोह बरकरार रहता है जहां से सुख मिलता है वही हमारा संसार बन जाता है, क्योंकि इंसान अपने सुख से बाहर ही निकलना नहीं चाहता, इसलिए सुख की चाह मोह के रूप में उसे इस संसार में बांधे रखती है, अध्यात्म ज्ञान के रास्ते ही व्यक्ति अपना मन संसार और इसके सुखों से अपनी चेतना से जोड़ लेता है, जिसकी ताकत से वह शरीर इंद्रियों, मन बुद्धि सब पर विजय पा लेता है, उसे ब्रह्मण भी कहते हैं, उसे ब्रह्मा कि स्थिति का आनंद लेने के बाद संसार के सब सुख फीके लगने लग जाते हैं। यही शारीरिक आनंद से ऊपर उठने का वक्त होता है। यह अवस्था जीवन मुक्ति मोह भाव का अंत कहलाती है। जब व्यक्ति, जीवित रहकर भी जीवन की अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

11. कभी भी भूल कर दुर्जन दुष्ट, पापी से दोस्ती न करो, दूर से दुआ सलाम करके किनारा करने में ही भलाई है, उनको न कभी सुनाओ और ना कभी सुनो उनसे बात करना समय बर्बाद करना है।

12. यह जीवन अनमोल है, हम सभी वैसे तो ड्रामे के अनुसार कार्य करते रहते हैं फिर भी कुछ सावधानियां जीवन में उतार लें तो जीवन सरल भी बन सकता है। खाने पीने की सावधानियां भी जरूरी है। 40 वर्ष के बाद नमक व मीठा कम से कम लें, एक दिन सप्ताह में व्रत जरूर रखे, हरी सब्जियों व अंकुरित आहार का नित्य प्रयोग करें, कम से कम खाये अधिक मत खायें, पेट को खाली रखे, प्राणायाम व 1000–8000 कदम हर रोज सूर्य उदय होने से पहले जरूर चलें, पानी शुद्ध पीयें, हाथ साबुन से कम से कम सात बार जरूर धोयें, नमस्कार से काम चलाये हाथ मिलाने की चेष्टा कम से कम करें मन से प्यार करें फिर देखना यह जीवन कितना सुखमय, अद्भुत लगेगा। सारा कार्य जो भी करते हो स्वयं न कहकर, करने के लिए तत्पर रहता है, उसी की हाजिर नाजिर करके कार्य कराते रहोगे तो जीवन सुखमय हो जायेगा।

निर्मल मन, प्रभु का सदन

जब भी इंसान के अंदर एक ख्वाहिश, कशिश पैदा होती है कि वह प्रभु से मिले, तो उसकी आत्मा से एक पुकार उठती है। यह उस अवस्था की बात है, जब इंसान बौद्धिक स्तर पर अपने–आपको प्रभु का अंग समझता है, उसे मालूम हो जाता है कि उसकी संभाल करने वाला कोई है। उसे यह अहसास हो जाता है कि दुनिया में प्रभु के सिवाय उसका कोई नहीं है, जो उसकी मदद करे।

कबन गुन प्रान पति मिलउ मेरी माई।।

हे प्रभु! मुझे कौन सा गुण अपने आप में लाना है? मेरे परमेश्वर, मेरे माता–पिता आप मुझे मिलिए, किसी भी तरीके से मिलिए। मैं अपने आपको किस अवस्था में पहुंचाऊं यह आप मुझे समझा दीजिए।

इस दुनिया में इतना भटकाव है कि हम उसमें गुम हो जाते हैं और व्यर्थ के कार्यों में लगे रहते हैं। हर इंसान किसी न किसी कार्य में व्यस्त रहता है और जिंदगी यूं ही चलती रहती है। जब कभी हमें यह ख्याल आता है कि हमें अपने आपको जानना है, प्रभु को पाना है, तो कई रास्ते हैं, जिस पर इंसान चलना शुरू कर देता है।

चीन में कई कलाकार बाहर के देशों से आये और उन्होंने राजा से कहा कि हम अपनी कलाकृति आपको दिखाना चाहते हैं।

बादशाह ने एक बड़े हाल में एक दीवार पर उन्हें अपनी कला दिखाने के लिये कहा। बादशाह ने अपने देश के कलाकारों को बुलाकर उनसे भी चित्रकारी करने के लिये कहा, ताकि यह देखा जाये कि किसकी कृति श्रेष्ठ है। चीनी कलाकारों ने सोचा कि विदेशी कलाकार हमसे बेहतर हैं, हम कैसे इनका मुकाबला करेंगे? उन्होंने मिलकर सोच–विचार किया कि हम कुछ ऐसा बनाएं, जो बहुत अच्छा हो। उनमें से एक बुजुर्ग कलाकार ने एक सुझाव दिया कि हम भी दूसरी दीवार पर कलाकृति करना चाहेंगे। राजा ने उस हाल के बीच में एक परदा लगावा दिया, ताकि दोनों तरफ के कलाकार एक–दूसरे की कलाकृति न देख सकें। राजा ने एक महीने का समय निश्चित कर दिया और कहा कि एक महीने बाद

झगड़े से बचना श्रेयस्कर है यदि उसमें पड़ भी जाएं तो शत्रु को अपना तेज, शक्ति और पौरुष दिखा दें। –शेक्सपियर

निर्णय होगा कि किसकी कलाकृति बढ़िया है। दोनों तरफ के कलाकारों ने काम शुरू कर दिया। बाहर के कलाकारों ने अच्छे–अच्छे चित्र बनाने शुरू किये, तो लोगों ने कहा कि चीन के कलाकार तो कुछ नहीं बना रहे, दीवार पर कुछ रंग नहीं लगा रहे। चीन के कलाकारों ने दीवार को केवल घिसाना शुरू कर दिया, दीवार को रगड़–रगड़ कर साफ करने लगे। एक महीना बीत जाने पर राजा कलाकृति देखने के लिए आया। पहले बाहर के कलाकारों की चित्रकारी देखी, राजा को बहुत पसंद आई। फिर उसने देखा कि मेरे देश के कलाकारों ने भी कुछ किया है नहीं। राजा ने जब दीवार को देखी तो वह इतनी साफ थी कि उसमें बाहर के कलाकारों की कलाकृति दिखाई दे रही थी। हमें भी अपने आपको साफ करना है, आईने की तरह, ताकि हममें प्रभु की झलक दिखाई दे। संत तुलसी साहिब ने भी कहा है–

दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिए।
ध्यान गैरों का हटा उसके बिठाने के लिए।।

अंदर से हमें अपने आपको साफ करना है, ताकि जितनी भी गंदगी है, वह सब की सब हट जाए। अभी हमारी हालत ऐसी है कि हम अपने आपको शरीर समझते हैं और बाहर की दुनिया में लगे हुए हैं।

सभी महापुरूषों ने हमें बार–बार यही समझाया है कि अगर हमने प्रभु को पाना है तो हमें भक्ति का रास्ता अपनाना होगा। हम हर समय, हर पल प्रभु की याद में बैठें, हम आपने आपको इतना साफ करें कि हर चीज हमें साफ दिखाई देनी शुरू हो जाए। जब हममें शंका होती है, तब हर चीज गलत दिखाई देने लगती है। हमें शक की भावना आ जाती है। हमें लगता है कि कुछ भी ठीक नहीं है। लेकिन यदि हमारा दिल साफ होगा तो हमें औरों की बुराइयां नहीं बल्कि अच्छाइयां दिखाई देंगी और जब तक हम सही तरीके से अंदर से साफ नहीं होंगे, तब तक हम प्रभु से मिल नहीं सकते। प्रभु सच्चाई और सफाई का महासागर है और जब तक हममें गंदगी होगी, हम उस महासागर में कैसे मिल सकते हैं, कैसे एकमेक हो सकते हैं?

जब तक हमारे अंदर में प्रभु के लिए प्रेम नहीं जागृत होगा, तब तक हमारी आत्मा का मिलाप परमात्मा से नहीं हो सकता, हम प्रभु से एकमेक नहीं हो सकते। जब तक हम उस प्रभु से एकमेक नहीं होंगे, तब तक हम शांत नहीं रह सकते। प्रभु का प्रेम हमें एकता की डोर में बांधता है और प्रभु से एकता हम अपने आप में अनुभव तभी कर सकते हैं, जब हम अंतर्मुख होते हैं, शिव–नेत्र पर एकाग्र होते हैं, क्योंकि जब हम इस स्थान पर एकाग्र होते हैं, तो हम अपने अंतर में प्रभु की ज्योति और श्रुति का अनुभव करते हैं।

जब तक हम अहंकार से नहीं हटेंगे, जब तक हम अपने आपको पूरी तरह से परमात्मा को समर्पित नहीं करेंगे, तब तक हम प्रभु से मिल नहीं सकते। लेकिन जब हमारी समझ में यह आ जाये कि परमात्मा के हुक्म से ही सब कुछ चलता है, तब फिर हमारे जीवन में भी सुख और चिर–आनंद की बौछार होने लगती है। जब तक हम उस अवस्था में नहीं पहुंचते, तब तक हम परमात्मा से नहीं जुड़ सकते। जब हम उस अवस्था में पहुंच जाते हैं, हमारा ध्यान प्रभु की ओर हो जाता है और इस दुनिया से हटना शुरू हो जाता है। जैसे–जैसे हमारा ध्यान इस दुनिया से हटता जाता है, वैसे–वैसे हमारे कदम अपने निजधाम सचखंड की तरफ बढ़ते चले जाते हैं। जिंदगी का मकसद यही है कि हम इस जिंदगी का पूरा–पूरा फायदा उठाएं और यह फायदा हम तभी उठा सकते हैं, जब हमारा पूरा ध्यान प्रभु की ओर हो और तब इस जिंदगी में हम परमात्मा से एकमेक हो सकते हैं।

कैसे हों हमारे कर्म

–नरेंद्र आहूजा

वर्तमान भौतिकतावादी युग में इस तथाकथित विकास की चकाचौंध से सम्मोहित भागते मनुष्य के जीवन की यही विसंगति है कि या तो आज का मनुष्य भागदौड़ की जिंदगी भौतिक संपदा को इकट्ठा करने की आपाधापी सारे अकर्तव्य पापरूप कर्म करता है या फिर इस भागदौड़ की जिंदगी से थककर अपने जीवन की संध्या में अकर्मण्य होकर निरपेक्ष भाव से बैठकर स्वयं को ईश्वर भक्त मानता है। ऐसी स्थिति में प्रश्न उत्पन्न होता है कि आखिर हम मनुष्यों के कर्म कैसे होने चाहिए? कौन से कर्म बंधनों का कारण बनते हैं तो क्या कर्म सन्यास उचित है?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर हमें वैदिक वांग्मय में मिलते हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का दूसरा मंत्र जो कि समस्त गीता ज्ञान का आधार है इन प्रश्नों के उत्तर देता है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत् समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

अर्थात हे सुखेच्छु मनुष्य इस संसार में यज्ञादि वेदोक्त परोपकार के कर्मो को करते हुए ही मनुष्य सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे। इस प्रकार से मनुष्य पाप रूप कर्म में लिप्त नहीं होगा। इससे भिन्न कोई और मार्ग जीवन की सुख शांति की प्राप्ति का नहीं है।

अब प्रश्न उठता है कि कर्म कहते किसे हैं। कर्म को परिभाषित करते हुए महर्षि देव दयानन्द आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखते हैं कि मन इंद्रिय और शरीर में जीव चेष्टा विशेष करता है उसे कर्म कहते हैं। अर्थात मनुष्य के शरीर में ईश्वर प्रदत्त कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों का होना कर्म की आवश्यकता को स्थापित करता है। यदि कोई तथाकथित ईश्वर भक्त यह सोचें कि कर्म बंधन का कारण होते हैं और उन बंधनों से बचने के लिए कर्म सन्यास लेकर बैठ जाये और यह सोचने लगे कि

अजगर करे ना चाकरी, पंछी करे ना काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।

तो कर्महीन व्यक्ति को वेद भगवान ने 'अकर्मा दस्युः' कहकर लताड़ा है। कर्तव्य कर्मों से डरकर जीवन संघर्ष में हथियार डाल कर पलायन कर जाना पापाचार की श्रेणी में आता है। वैसे कर्तव्य

विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दिखती है, दुनिया उस पर अमल करती है। –विनोबा भावे

कर्म का निष्काम भाव से निर्वहन ही धर्म कहलाता है और यदि हम कर्महीन होकर बैठ जायें तो अपने धर्म को मार रहे हैं यदि हम अपने धर्म को मार देंगे तो निश्चित रूप से मरा हुआ धर्म हम धर्महीनों को मार देगा जैसा कि महाभारतकार ने स्पष्ट कहा है

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।

यदि हमें कर्तव्य कर्म का पालन करते हुए धर्म की रक्षा करेंगे तो निश्चित रूप से धर्म हमारी रक्षा करेगा। इससे सिद्ध हुआ कि हम निष्काम भाव से कर्तव्य कर्म यज्ञीय परोपकार के कार्य करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करें। इस प्रकार के कर्म कभी मनुष्य के बंधन का कारण नहीं बनते।

चूंकि मनुष्य अपने कर्मों का 'स्वतंत्र कर्ता' है जैसा कि पाणिनी अष्टाध्यायी के सूक्त में स्पष्ट है तो निश्चित रूप से कर्ता होने के कारण ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अंतर्गत मनुष्य अपने किए कर्मों का भोक्ता भी है। मनुष्य किसी भी कार्य को करने ना करने वा अन्यथा करने के लिए स्वतंत्र है और कर्ता अर्थात स्वतंत्रता से सभी कर्मों को करने वाला है अर्थात जिसके स्वयं के आधीन सभी साधन होते हैं। इसीलिए मनुष्य कर्ता होने के कारण भोक्ता भी है।

यदि इस तथाकथित विकास की अंधी दौड़ में चकाचौंध से सम्मोहित मृगमारीचिका का शिकार मनुष्य विकास के नाम पर अपनी अधोगति की ओर तेजी से दौड़ने लगे तो निश्चित रूप से ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के आधीन अपने पाप रूप कर्मों के फल का भोक्ता भी वह स्वयं होगा। और ऐसे पाप रूप कर्म उसके बंधनों का कारण बनते हैं और न्याय दर्शन के अनुसार 'बाधना लक्षणं दुःखम्' यह बंधन ही दुःख का लक्षण है जैसे चोर द्वारा भौतिक प्राप्ति हेतु की गई चोरी पाप रूप कर्म पकड़े जाने पर सजा अर्थात जेल उसके दुःखों का कारण बनती है।

फिर प्रश्न उठता है कि आखिर किस प्रकार के कर्म बंधन का दुःख का कारण नहीं बनते तो इसके लिए हमें कर्मों के प्रकार को समझना होगा। काल के आधार पर कर्म के तीन प्रकार हैं

1. क्रियमाण – जो वर्तमान में किए जा रहे हैं।
2. संचित – जो क्रियमाण का संस्कार ज्ञान में जमा होता है।
3. प्रारब्ध – जो पूर्व में किए गए कर्मों का सुख दुख रूप फल का भोग किया जाता है।

फलों के आधार पर गीता ज्ञान में योगेश्वर कृष्ण ने कर्म योग समझाते समय कर्तव्य कर्म का विवेचन करते हुए निष्काम भाव से किए गए यज्ञीय अर्थात परोपकार के कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कार्यों की श्रेणी में रखा है। गीता में 'कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' कहकर योगेश्वर कृष्ण ने कर्म पर तो मनुष्य अधिकार बतलाया परंतु फल को मनुष्य के अधिकार क्षेत्र से बाहर और फल को ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अधीन रखा है। अब यदि मनुष्य अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात कर्तव्य कर्म के निर्वहन को तो भूल जाए परंतु ईश्वरीय अधिकार क्षेत्र अर्थात न्याय कर्ता के न्याय कर्म फल की अभिलाषा करे तो यह कामना उसके दुःखों का कारण बनेगी। परंतु इसका यह भी कदापि अर्थ नहीं कि हम बिना परिणाम की परवाह किए बिना सोचे समझे कर्म करें। कर्तव्य कर्म के निर्धारण के उपरांत फल की चिंता उस कार्य के संपादन में बाधक बनती है। उदाहरण के लिए यदि कोई बंदर आम की गुठली को बो तो दे लेकिन फल की इच्छा के वशीभूत उसे उखाड़ कर रोजाना देखे तो वह कभी पेड़ नहीं बनेगा। इससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य को जीवन में निष्काम भाव से पूर्ण धैर्य संयम के साथ परोपकार के यज्ञीय कार्य करने चाहिए।

कौम की वर्तमान स्थिति के दोषी कौन?

भले राम बेनीवाल

जो कौम विश्व विजेता रही। जिससे सारा विश्व कांपा। जिस कौम ने सातों महाद्वीप पर राज्य किया। पृथ्वी के छः चकवे इसी जाट/जट्ट कौम में हुए। जिस कौम ने संसार को सभ्यता एवं संस्कृति सिखाई जो कौम हमेशा दूसरे के दुःखों को अपना समझकर उसके दुःख की भट्टी में कूदती आई। जिस कौम ने क्षक वध से लेकर कारगिल तक दुश्मनों के छक्के छुड़ाये। जिस कौम ने तथा कथित विश्व विजेता सिकंदर को भी धूल चटाई तथा उसे यह कहने पर मजबूर किया कि युद्ध में जाटों से बचो। जिस कौम के गुण, युद्ध कौशल, पराक्रम को देखकर दूसरे धर्मों के लोग भी प्रशंसा करे बिना नहीं रह सके चाहे वे अंग्रेज या अन्य लेखक व यौद्धा रहे हों। जिस कौम के नाम पर आज भी डेनमार्क में जाट लैंड नाम का प्रांत है। जिस कौम के विजेता अलारिक एवं अतिला ने इटली पर 410 ई. में अपनी विजय के झंडे गाढ़े तथा सत्ता–भोग किया। जिस कौम के गाहलान ने वर्तमान फ्रांस पर राज्य किया जिसके कारण उसका नाम सदियों तक गाल देश रहा। जिस कौम के डैनों (बैनीवालों) ने डेनमार्क, इग्लैंड, अर्मिनिया, टर्की, रूस व चीन में सत्ता सुख भोगा। जिस कौन के नैनो ने इग्लैंड, हालैंड, नार्वे पर सत्ता स्थापित की। जिस कौम की दहिया गौत्री महारानी तोमरिस ने यूनान तथा कौ–ठू–वैन (वैनीवाल) ने चीन में 187 ई. पू. राज्य किया। जिस कौम मानों, चीमा, खोखररें ने चीन, ईराक, ईरान में सत्ता स्थापित की। जिस कौम ने अपने एक मात्र देव शिव महाराज के आदेश पर नील (जाट) गंगा पहाड़ों से खोदकर निकाली वह कौम आज कहां खड़ी है उसका आज क्या अस्तित्व है। जो कौम आज इतनी बिखरी हुई है।

यह संदर्भ चच नाम, वीर यौधेय लेखक राहुल सांकृत्यायन मध्य एशिया का प्राचीन इतिहास, जाट विशुद्ध बौद्ध हैं लेखक धर्म कृिति कर्नल टॉड, कनिंधम, तेजपाल सिंह धाम इत्यादि हैं।

विश्व की श्रेष्ठतम कौम आज कहां खड़ी है। इसमें आज इतना पिछड़ापन क्यों है। इसमें आज इतनी फूट क्यों है। इस कौम की वर्तमान स्थिति के लिये जो कारक दोषी है। मैं अपने दिमाग व बुद्धि के अनुसार वर्णन करूंगा।

इसमें निम्न कारण हैं:–

1. शिक्षा का अभाव 2. आपसी द्वेष 3. सामूहिक मान्यता का अभाव 4. मठाधीश 5. राजनेता

शिक्षा का अभाव :– जाट कौम आदिकाल से खेती व पशुपालन में लीन रही है। इन दोनों बातों के लिये उसे क्षेत्र की जरूरत पड़ती थी। क्षेत्र के कारण ही इसे क्षत्रिय का दर्जा दिया गया। उस क्षेत्र की रक्षा हेतू इस कौम को लड़ाई भी लड़नी पड़ी। जिसके कारण इसके हाथ में सदा से ही हल या तलवार की मूठ रही। कलम कभी आई ही नहीं। राजा हर्षवर्धन बैस की मृत्यु के पश्चात विश्व विख्यात विश्वविद्यालय तक्षशिक्षा व नालंदा का भी पतन हो गया। जिसके कारण सारे ही देश में शिक्षा का अभाव हो गया। उसी समय 693 ई. में जाटों में से ही कुछ लोगों को बहका कर धर्म के ठेकेदारों ने नव जाति राज–पुत्र का आबू पवर्त पर पाखंडवाद के द्वारा निर्माण किया जो 13वीं व 14वीं शताब्दी में राजपूत जाति का रूप धारण कर गई। यह काल भारतवर्ष के व जाट कौम के पतन का ही कारण बना। मध्यकाल में जाट इतने दब गये कि उनका नैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पतन हो गया। जाटों की वर्तमान स्थिति के लिये शिक्षा की अहम भूमिका है।

आपसी द्वेष :– जाट कौम को वर्तमान के लिये इन का अहंकार मैं बड़ा, मैं बुद्धिमान, मैं श्याना तथा मैं ताकतवर ले बैठा। आज एक जाट दूसरे जाट से घृणा नफरत एवं द्वेष रखता है। वैसे तो आज सारा समाज अपने दुःख में दुःखी नहीं बल्कि दूसरे के सुख में दुःखी है। आज जितनी टांग खिचाई जाट कौम में है उतनी किसी कौम में नहीं। आज यदि कोई व्यक्ति जाटों के बारे में कोई इतिहास लिखता है उनकी कोई संस्था चलाता है। कोई बुद्धिजीवी कोई लेख लिखता है। कोई पत्रिका निकालता है तो दूसरे उसकी टांग खिंचते हैं। उस मूर्ख को यह पता नहीं वह कौम के लिये कुछ न कुछ तो कर रहा है। इस कौम में ऐसे अनेकों लोग पैदा हो चुके हैं। जो स्वयं तो कुछ करने में सक्ष्म नहीं लेकिन दूसरों को भी कुछ नहीं करने देते। उल्टे उनकी टांग खिंचते हैं।

आज सामूहिक मान्यता का अभाव :– आज पूरा समाज किसी एक पथ, धर्म, देवता, देवी स्थान को नहीं मानता। यदि सही देखा जाये तो जाटों का एक मात्र आदि देव शिव महाराज है जिस प्रकार सिक्खों का कोई एक मात्र स्थान उनके क्षेत्र में गुरुद्वारा है। तथा सारी सिक्ख कौम का एक ही स्थान स्वर्ण मंदिर अमृतसर है। इस प्रकार जाटों का कोई स्थान नहीं है। कोई भी सिक्ख किसी भी गुरुद्वारे का अपमान सहन नहीं कर सकता। जाटों को भी कोई न कोई ऐसा स्थान बनाना होगा। जहां पर सारी जाट कौम इकट्ठी होकर अपनी भलाई व एकता का कोई फैसला ले सके। जाट कौम को भी कोई ऐसी संस्था व स्थान बनाना होगा जहां पर सारे इकट्ठे हो सकें और सामूहिक फैसले ले सकें। अब जाट आरक्षण पर ही देख लें। जाट बच्चों के भविष्य का प्रश्न है, पर इसमें एक होकर नहीं चल रहे। अपने को सबसे बड़ा चौधरी समझते हैं। इसके कारण दोबारा जाट आरक्षण खतरे में पड़ गया है।

मठाधीश :– आज कौम के मठाधीश भी इस कौम के पिछड़ापन व आपसी द्वेष, वैर–विरोध के कारण बने हुए हैं। वे किसी जाट महापुरुष के नाम पर कोई प्रोग्राम करते हैं। उन स्टेजों को कहीं पर तो भगवाकरण, कहीं पर कांग्रेसीकरण कहीं पर लोकदलीकरण तथा कहीं पर अन्य कारण किया जाता है। वे मठाधीश, अपनी निजी पहचान बनाने के लिये ऐसे प्रोग्रामों का प्रबंध करते हैं। वहां पर विभिन्न दलों के नेताओं खासकर सत्तापक्ष के नेताओं को बुलाते हैं। उन्हीं को स्टेजों पर स्थान दिया जाता है। ये नेता वाहवाही लूटने के लिए बड़े–बड़े वायदे करते हैं लेकिन कभी कोई फायदा या वायदा पूरा नहीं करते हैं। ये मठाधीश भी स्टेजों पर अड़कर बैठ जाते हैं। जबकि बुद्धि जीवियों को वहां पर कोई भी स्थान नहीं दिया जाता है। स्टेजों पर स्थान तो केवल बुद्धिजीवी लोग एक राज्य से दूसरे राज्य में हजारों रूपये खर्च करके जाते हैं। लेकिन दुःख तब होता है कि स्टेजों पर वे मठाधीश जम कर बैठ जाते हैं। उन्हीं को बोलने का समय दिया जाता है। कयोंकि उनके नाम के आगे अ.भा. जाट महासभा का राष्ट्रीय प्रदेशी व जिला प्रधान की कोई न कोई फीती लगी होती है। पिछले 10 वर्षों से तो मैं भी ऐसे लोगों के संपर्क में आ रहा हूं। उनकी बुद्धि तो सीमित है। उस फीती के कारण ही उन मठाधीशों को स्टेजों पर स्थान व बोलने का समय दिया जाता है। इसके विपरीत बुद्धिजीवी लोगों तथा जो वास्तव में कौम के नाम पर समाज सेवा करते हैं उनको स्थान नहीं मिलता ये ढ़ोंगी, पाखंडी तथा फरेबी व्यक्ति इसी प्रकार स्टेजों पर आसीन होते रहेंगे तथा कौम का अहित करते रहेंगे। यदि कौम को ऊपर उठाना है इसको आगे बढ़ाना है तो इन मठाधीशों को भी पीछे धकेलना होगा ताकि कौम का भला हो सके। कौम को आगे बढ़ाया जा सके।

राजनेता :– वर्तमान में जाट राजनेता चाहे वे किसी भी दल के क्यों न हों ये ही इस कौम के सबसे बड़े दुश्मन हैं। ये लोग चुनाव के समय जाति का नारा देकर वोट बटोरते हैं। विधायक, लोकसभा सदस्य, राज्य सभा सदस्य एवं मंत्री बनते हैं तो बनते ही कौम को भूल जाते हैं। उन्हें कौम याद नहीं रहती है।

दानवीर सेठ छाजूराम के गांव में उनकी प्रतिमा की स्थापना

डॉ. आर.के. राणा

चौ. छाजूराम जी का जन्म 28 नवंबर 1865 में अलखपुरा गांव, जिला भिवानी (हरियाणा) में एक साधारण किसान परिवार में चौ. सालिग राम लांबा के घर हुआ था। आपके परिवार में दो भाई बिरखा राम व लच्छे राम थे तथा एक बहन थी।

चौ. छाजूराम की प्रारंभिक शिक्षा बवानी खेड़ा के स्कूल में हुई। उसके बाद उन्होंने भिवानी से मिडिल पास की और रेवाड़ी से हाईस्कूल शिक्षा प्राप्त की। आप बड़े मेधावी छात्र थे और सभी विषयों में प्रवीण थे। परंतु पारिवारिक परिस्थितियों के कारण दसवीं से आगे पढ़ नहीं सके।

भिवानी में आपका संपर्क एक बंगाली इंजीनियर श्री राम साहब शिवनाथ से हो गया था जो आपकी मेहनत व कुशाग्र बुद्धि से बहुत प्रभावित हुये। इंजीनियर शिवनाथ आपको अपने साथ हजारी बाग, कलकत्ता ले गए। वहां आप उनके बच्चों को पढ़ाते थे। फिर आपका संपर्क कलकत्ता के मारवाड़ी सेठों से हो गया। आप उनके बच्चों को भी पढ़ाने लगे और उनकी चिट्ठियां भी पढ़ते और जवाब भी देते थे। आप एक अच्छे भाषाविद होने के कारण आप मुंशी जी व मास्टर जी के नामों से जाने जाते थे। तेज बुद्धि होने के कारण आप उनके व्यापार की बातों और तौर तरीकों को अच्छी तरह से समझने लगे। व्यापार के गुण भी आपने उन मारवाड़ी सेठों से ग्रहण किये।

प्रभु की कृपा से आपने भी व्यापार में कदम रखा और सबसे पहले पटसन की बोरियां आदि बेचने का काम शुरू किया। कठोर परिश्रम के कारण आपको व्यापार में सफलता मिली और शीघ्र ही आपको बड़े दलालों में गिनती होने लगी। आपने कई कंपनियों के शेयर खरीदे। धीरे–धीरे कलकत्ता का जूट व्यापार आपके हाथों में आ गया व आप इस व्यापार के बादशाह कहलाने लगे। आपको इस काम से खूब धनराशि प्राप्त हुई और आपकी गिनती बड़े करोड़पतियों में होने लगी।

चौ. छाजूराम बहुत बड़े उदार ह्रदय व नम्र व्यक्ति थे। आप सामाजिक व कल्याणकारी इंसान थे। आप ग्रामवासियों व किसानों की समस्या को खूब समझते थे। अतः आप ग्राम उत्थान के कार्यों में सहयोग देने लगे। आपने जगह–जगह अपने पैतृक क्षेत्र में जरूरत अनुसार मदद की। गांव में पानी के लिए कुएं–जोहड़ बनवाए। यात्रियों के लिए धर्मशालाएं बनवाईं। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए गांव में स्कूल बनवाए, बड़े शहरों में उच्च शिक्षा के लिए स्कूल व कॉलेज बनवाए। स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अस्पताल बनवाए। अकाल की स्थिति में लोगों की भरपूर मदद की।

आपने लाहौर से लेकर कलकत्ता के अनेकों संस्थाओं को भरपूर आर्थिक सहायता दी। कई विश्वविद्यालयों को लाखों रुपये चंदा दिया। होनहार विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता व छात्रवृति प्रदान की। आपने चौ. छोटूराम को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बहुत मदद की। आगे उनके राजनैतिक जीवन में भी आपने बहुत सहयोग दिया। आपसे प्रेरणा पाकर चौ. छोटूराम किसानों की किस्मत सुधारने में कामयाब हो सके। आपने महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, रविंद्र नाथ टैगोर, मोती लाल नेहरु आदि की भी भरपूर सहायता की और स्वतंत्रता आंदोलन में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। दूसरे विश्व युद्ध में आपने अंग्रेज सरकार को भी आर्थिक सहायता दी थी। कलकत्ता में अंग्रेजों की कॉलोनी में भारतीयों में केवल आपकी ही कोठी थी। अज्ञातवास में भगत सिंह कई महीने आपकी कोठी में रहे थे।

आप भारत के दानवीर सेठ व दधिचि कहलाने लगे। आपकी इन सब सेवाओं के लिए अंग्रेज सरकार ने आपको उच्च सम्मान 'सर' की उपाधि से नवाजा। आपकी ख्याति देश–विदेश में खूब फैली और अखबारों में आपकी खूब प्रशंसा होती थी। आपका कहना था "भगवान ने मुझे बहुत धन दिया और मैंने भी जरूरतमंदों को दिल खोलकर दान दिया और मेरे जीवन की बड़ी इच्छा पूरी हो गई।"

इस महान आत्मा का 7 अप्रैल 1943 को स्वर्गवास हो गया। आपकी मृत्यु पर हजारों लोगों के आंसू निकल पड़े। दीनबंधु चौ. छोटूराम ने आपको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था, "भारतवर्ष का महान दानवीर पुरुष आज अमर होकर हमारे लिए प्रेरणा स्रोत बन गया है। मैं अपने धर्मपिता को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनकी इच्छाओं के अनुसार कार्य करने का संकल्प लेता हूं।" आपकी यादगार में कई शिक्षण संस्थाएं हिसार में बनी और आपकी सुंदर प्रतिमाएं स्थापित की जिनसे लोगों, विशेषकर विद्यार्थियों को आपके जीवन की उपलब्धियों से बड़ी प्रेरणा मिलती है और जीवन में संघर्ष के साथ आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति जागृत होती है।

दानवीर सेठ छाजूराम की एक प्रतिमा 21 सितंबर 2015 को उनके पैतृक गांव अलखपुरा में स्थापित की गई। इस अवसर पर मुझे भी चौ. छाजूराम मैमोरियल जाट कॉलेज, हिसार के प्रिंसिपल आई.एस. लाखलान ने शामिल होने के लिए निमंत्रण दिया और मैं उनके साथ उनके गांव गया था। वहां पर सेठ छाजूराम के नाम पर बने पार्क में हजारों गणमान्य व्यक्ति दूर–दूर से आए हुए थे। भारी संख्या में महिलाएं तथा स्कूली बच्चे भी एकत्रित हुए थे।

सबसे पहले मंत्रोचारण के साथ हवन किया गया। मुझे इस अवसर पर आहूति डालकर उस महान आत्मा को श्रद्धांजलि देते हुए बड़ा वर्ग महसूस हो रहा था। इसके बाद उनकी प्रतिमा का अनावरण किया गया जिसके लिए ग्राम सभा ने एक बड़े

संत कंवर सिंह जी (राधा स्वामी सत्संग, दिनोद, भिवानी) को विशेषतौर पर आमंत्रित किया गया था। मैंने संत जी को दूरदर्शन पर कई बार प्रवचन देते सुना था। उस दिन उनको अपने सामने देखकर बड़ी खुशी हुई। मैंने उनका अभिवादन किया व अपना परिचय दिया। उन्होंने मुस्कराकर मुझे कहा कि आओ प्रतिमा का अनावरण करें। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन्होंने रिबन काटने के लिए मुझे कैंची उठाने को कहा तथा मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर ही रिबन कटावाया। उसके बाद हमने प्रतिमा का अनावरण करके फूल–मालाएं अर्पित कीं। यह अवसर मेरे लिए बड़ी सौभाग्य की बात थी कि इतने गणमान्य व्यक्तियों के होते हुए मुझे एक महान विभूति की प्रतिमा का अनावरण करने का शुभ अवसर मिला। मैंने अपने आपको धन्य समझा।

प्रतिमा अनावरण के बाद पंडाल में समारोह का संचालन हुआ। श्री आई.एस. लाखलान ने सभी महानुभावों का स्वागत किया। उन्होंने अपने संबोधन में चौ. छाजूराम के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुये, उन्होंने बताया कि किस तरह एक साधारण किसान का बेटा संघर्ष करते हुए ऊंची बुलंदियों पर पहुंच गया और देश–विदेश में अपनी सोच, व्यवहार, समाज सेवा व दानशीलता के कारण ख्याति प्राप्त की। अन्य वक्ताओं ने भी उनकी इस महान सफलता पर अपने विचार प्रकट किए और उनके जीवन से प्रेरणा लेकर युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने का आह्वान किया।

समापन समारोह होने के बाद हमने चौ. छाजूराम की गांव में बनी कोठी का निरीक्षण किया। यह पुरानी शैली में बनी हुई कोठी है। दरवाजे बड़े ऊंचे हैं व दोनों तरफ पत्थर की शिलाओं पर बड़ी अच्छी नक्काशी की गई है। चौ. छाजूराम के समय इस बड़ी कोठी में आगंतुकों व गरीबों के लिए भंडारा चलता रहता था। अब यह समय की दुहाई देती हुई विरान पड़ी है क्योंकि वे देशभर में इतनी बड़ी विरासत छोड़ गए कि उनके परिवार वालों से सारी संपत्तियां संभाली भी नहीं जा रही हैं। हमने हांसी के पास शेखपुरा गांव में भी उनकी शानदार दो मंजिला कोठी का अवलोकन किया जो एक बड़े फार्म हाऊस में स्थित है।

धन्य हैं ऐसे लोग जो अपनी खुद की मेहनत से जीवन के उच्च शिखर तक पहुंचे जिससे गांव व किसान वर्ग को समाज में अपना सिर ऊंचा करने का प्रोत्साहन मिला।

चौधरी छोटूराम का एक पत्र

चौ. कबूल सिंह व डा. शोरम

उच्च चरित्र के संबंध में चौ. छोटूराम ने गांव के तमाम अफसरों के पास यह पत्र भेजा था:–

प्रिय,

आपको यह पत्र मैं सरकारी हैसियत में लिख रहा हूं। यदि आपमें ये दोष न हो जिनका जिक्र इस पत्र में है, तो बुरा न मानना।

किसान कौम को मैं हृदय से प्यार करता हूं, लेकिन मुझे दुख है कि समाचार को सुनने से कि गांव के लोग जो उच्च पदों पर हैं। उनमें से कुछ शराब पीने, रिश्वत लेने आदि दुर्गुणों में फंसते जा रहे हैं। उनके इन गलत कामों से सारी कौम बदनाम हो जाएगी।

मैं यह तो चाहता हूं कि आप लोग अच्छा खाएं, अच्छा पहनें, किंतु यह कतई नहीं चाहता कि फैशन और चाट में पैसे बर्बाद करें। मैं आपको यह याद दिलाता हूं कि हम उन लोगों की संतानें हैं, जो बेझड़ ज्वार–बाजरे की रोटी दही व प्याज से खाते थे, और हमसे अधिक तंदरूस्त थे। मनोरंजन भी कोई बुरी चीज नहीं है। किंतु मनोरंजन से चरित्र बिगड़ता है। उन्हें मैं पसंद नहीं करता हूं।

शराब पीना एक ऐसा दुर्व्यसन है बड़ी–बड़ी सल्तनतों व मालिकों को नष्ट कर दिया। कोई भी धर्म शराब पीने के पक्ष में नहीं है न कोई नीति शास्त्र ही शराब पीने को अच्छा मानता है। साधारण समझ के लोग भी इसकी निंदा करते हैं। अनुभवी लोगों ने इसके दुष्परिणामों से हमेशा सचेत किया।

चरित्र में जरा सी ढिलाई से जीवन पतन की ओर ढलने लगता है। दुर्व्यसनों में एक बार फंसने पर उनसे निकलना कठिन हो जाता है। इनको भोगने से कभी तृप्ति नहीं होती है। संयम ही उच्च चरित्र को कायम रखता है।

रिश्वत के संबंध में क्या हमें यह नहीं दिखता है कि जिनसे रिश्वत ले रहे हैं उनकी सामर्थ्य तो इतनी भी नहीं है कि भली प्रकार से बाल–बच्चों का पोषण कर सकें। प्रायः ऐसे ही लोगों से रिश्वत ली जाती है। क्या हम हृदयहीन हैं कि यह तथ्य हमारी आंख से भी ओझल हो जाता है।

विशिष्ट पुरुषों एवं अधिकारियों की गोष्ठियों में मैं जब सुनता हूं कि जाट मुलाजिम अफसर भी इन दुर्गुणों की ओर बहने लगे हैं तो मेरा सिर शर्म से झुक जाता है। किसी आदमी के चरित्र में पूरी कौम के चरित्र की जांच होती है। उच्च जाति में यह गुण होना आवश्यक है, सादा–जीवन उच्च विचार, अच्छा चरित्र, ईमानदारी और पारस्परिक एकता।

टिप्पणी :–

लेकिन देखने में आ रहा है कि कई जाट अधिकारी, कर्मचारी अपने कुर्सी के नशे में जाट कौम के भाईयों की सही बातों को भी नहीं सुनते और अपनी वास्तविकता को भूल जाते हैं। आज जाट कौम के जायज हितों के रखवाले इसके अधिकारी ही हैं, उन्हें दलित अधिकारियों से एकता का सबक सीखना चाहिए। और जायज कार्यों के लिए मदद ही नहीं, जायज मार्ग दर्शन भी करना चाहिए वरना बाद में पछताने के सिवाय उनके पास कोई चारा नहीं होगा।

ईश्वर के अस्तित्व के लिए बुद्धि से प्रमाण नहीं मिल सकता क्योंकि ईश्वर बुद्धि से परे है। –महात्मा गांधी

Ch. Chhotu Ram in The Present Context

- Suraj Bhan Dahiya

The Jats are going through unique dynamics due to the paucity of effective leadership. What after all is a Jat? He is the reminder of an old tradition, reminder of an old culture. It sounds a warning, those who resist change will become irrelevant in the 21st century. In the first half of the 20th century, Ch. Chhotu Ram shook the slow Jat race and the Jats recovered their self-esteem and self confidence under Ch. Chhotu Ram's leadership. Gradually, the socio-economic condictions of Jats began to improve and soon they became a force to reckon with.

However, after untimely death of Ch. Chhotu Ram in 1945, the Jat community again went into oblivion. Look into the profile of the Jat community after Independence. The social mobility stagnated, inequality skyrocked and bhaichara vanished. The prospect of transforming the Jat community into a vibrant race shattered and we are now an isolated 'Kaum' of 21st century.

Political scientist Francis Fukuyama has posited that "Social principles of economic life" will determine the "coming struggle for world dominance". Only those societies with "high degree of social trust will be able to compete in the new global economy". Until recently, on the strength of social trust, the Jats used to support and feed all communities, best Kumhar, Lohar, Khati, Nai and all Scheduled Castes. They also used to preside over the Chattish biradari panchayats. However after Mandalisation of Castes and deprivation of Jats their dues, They are in a state of regression how.

Visionary Chhotu Ram gave 68 percent reservation to all agricultural communities of Punjab and radicalised the youth of the state. The Jats are in trauma after snatching away their reservation benefits. Reservation is now mirage to them. Once the great Jats, are now the deprived lot. There is a direct correlation between caste and socio-economic deprivation. The intellectual legacy which the Jats possessed has now ceased to exist.

In resurgent Jat Valley Ch. Chhotu Ram institution lised Jai Jawan, Jai Kisan' spirit into our journeys of rapid economic ascent. That was an environment of economic transformation of the Jats' Sadly enough, the faded spirit of 'Jai Jawan, Jai Kisan' has now culminated to the largest number of Jat war widows and Jat farm widows whose children have uncertain future. Why this obession with the Jat community? The poor far out number the relatively privileged Jats. The poor Jats residising in the villages have not become the shareholders in economic development- their aspirations are tangible.

The identity politics is the most dominant feature of Jat Valley- The Jat heartland. During World War II- The Jat Valley flourished under Ch. Chhotu Ram's leadership. The Mighity British was totally dependent upon Ch. Chhotu Ram for the supply of man, material and food to fight the war. During the war time Jat Valley had the same status and fame which the Silicon Valley has today. Agriculture was viable and job opportunities to the agricultural families were in plenty and Ch. Chhotu Ram was the undisputed leader of Jat Valley.

The leaderless Jat Community are now in dilemma. The agriculture is economic burden for the Kisans. The farmers' suicides have become a recurring phenomenon. The employment opportunities for the Jat youths are minimal, hence uncertain future for the youths will create infinite problems. The Jats should, therefore, undergo through radicalism. Strictly speaking, the problem of land ownership is the root-cause of the most of the troubles of the Jats. The Jats who migrated to Yugoslavia, Centuries back left agriculture and entered into education. They are now the leaders of knowledge based economy. The Jats of heart land have to follow their yugoslavia brothers. There is no option left for them here. The history of 21st century should be written with the knowledge power of the Jats.

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।